RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2020-22

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 59 अंक : 08 प्रकाशन तिथि : 25 जुलाई कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 अगस्त 2022

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

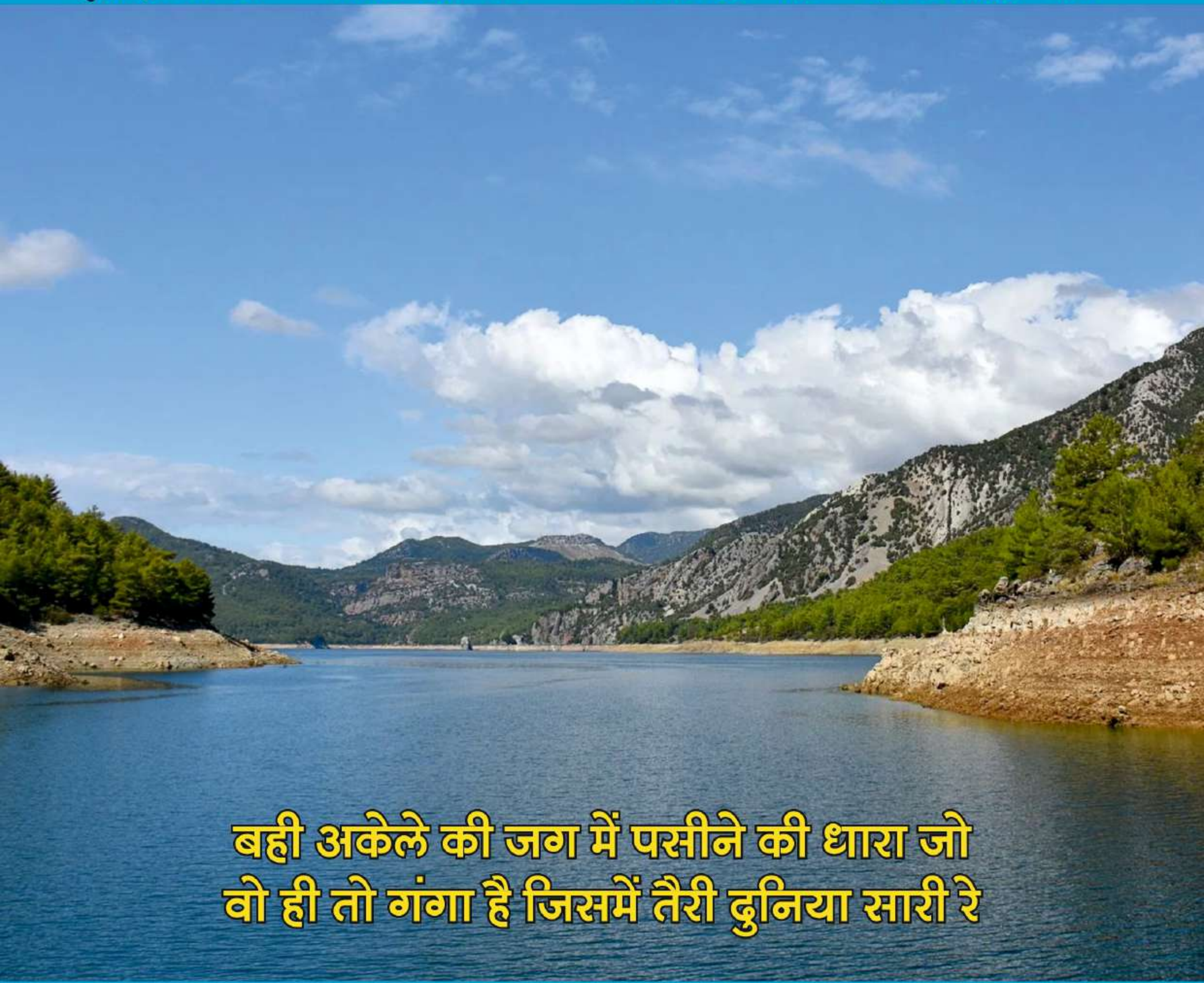

मेवाड़ वीर दुर्गा दास करणोत स्मृति समिति, उदयपुर

घोड़े की पीठ पर भी रोटी सेकना नहीं सुना,
ठोकर लगा दे राज्य के वो सिपाही ना सुना!

वीर दुर्गादास जयंती

श्रावण शुक्ला १४ (10 अगस्त, 2022)

आठ पहर चौबीस घड़ी घुड़ले ऊपर वास।
सैल अणी सूं सेकतो बाटी दुर्गा दास।।

ठा प्रताप सिंह जी/ऊँकार सिंह जी बेमला, श्री भगवत सिंह जी/रतन सिंह जी दवाणा
मान सिंह जी/गोविन्द सिंह जी बेमला, शिव सिंह जी/मदन सिंह जी बेमला , प्रताप सिंह जी/मदन सिंह जी बेमला
नाहर सिंह जी/निर्भय सिंह जी बेमला, भारत सिंह जी/रतन सिंह जी दवाणा, मोती सिंह जी/गोविन्द सिंह जी बेमला
जितेन्द्र सिंह जी/रतन सिंह जी दवाणा, दलपत सिंह जी/विजय सिंहजी दवाणा, विजय सिंह जी/प्रेम सिंह जी बेमला
भँवर सिंह जी/गणपत सिंह जी बेमला, नरवर सिंह जी/माधु सिंह जी रूपातलाई बेमला, रघुवीर सिंह जी/गणपत सिंहजी बेमला,
भगवान सिंह जी/पदम सिंह जी बेमला, नरेन्द्र सिंह जी/जसवंतसिंह जी बेमला, गुमान सिंह जी/भैरू सिंह जी दवाणा
ईश्वर सिंह जी/पदम सिंह जी बेमला, कमल सिंह जी/नरवर सिंह जी बेमला, देवेन्द्र सिंह जी/चमन सिंह जी बेमला
सुरेन्द्र सिंहजी/लाल सिंहजी बंगलाबेमला, देवेन्द्र सिंह जी/इन्द्र सिंह जी बेमला, राजेंद्र सिंह जी/सावंत सिंह जी बेमला
निर्भय सिंह जी/कालु सिंह जी बेमला, देवेन्द्र सिंह जी/ईश्वर सिंह जी बेमला, शक्तिसिंह जी/ईश्वर सिंह जी बेमला
दिग्विजय सिंहजी/चमन सिंहजी बेमला, नरपत सिंह जी/राय सिंह जी बेमला, अंशुमान सिंहजी/अर्जुन सिंहजी बेमला
डीग्गेन्द्रप्रताप सिंहजी/भँवर सिंहजी बेमला, ध्रूवराज सिंहजी/कमलेन्द्र सिंहजी बेमला , दीपेन्द्र सिंह जी/रूप सिंह जी बेमला
परमवीर सिंह जी/नरपत सिंह जी बेमला

संघशक्ति

4 अगस्त, 2022

वर्ष : 58 अंक : 08

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क - एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

☞ समाचार संक्षेप	✍	04
☞ चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर	05
☞ पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैनसिंह बैठवास	07
☞ छोड़ो चिन्ता-दुश्चिन्ता को	✍ स्वामी श्री जगदात्मानन्द	09
☞ खोये हैं प्रश्न	✍ गिरधारीसिंह डोभाड़ा	13
☞ पृथ्वीराज चौहान	✍ श्री विरेन्द्र सिंह मांडण	18
☞ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ श्री भँवरसिंह मांडासी	20
☞ यदुवंशी करौली का इतिहास	✍ राव शिवराजपाल सिंह इनायती	23
☞ देवी राठासण मंदिर (राष्ट्रश्येना) मरूवास...	✍ सुश्री डिम्पल शेखावत	25
☞ अपनी बात	✍	30

समाचार संक्षेप

केन्द्रीय प्रतिनिधिसभा :

श्री क्षत्रिय युवक संघ की केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा 26 जून, 2022 को आलोक आश्रम बाड़मेर में सम्पन्न हुई। इस सत्र के सभी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में निश्चय करने के लिए सभी संभाग प्रमुख, सभी प्रांत प्रमुख व केन्द्रीय कार्यकारिणी की उपस्थिति रही। कार्य योजना में शिविर, शाखाएँ, संघशक्ति-पथप्रेरक हेतु लेखन, प्रचार-प्रसार, ग्राहक सदस्यता अभियान, अनुषांगिक संगठनों की गतिविधियाँ आदि अनेक विषयों पर विमर्श करके इन क्षेत्रों में वर्ष भर में होने वाले कार्यों की योजना बनाई। वर्तमान में चल रही शाखाओं, प्रस्तावित शाखाओं की जानकारी क्षेत्रवार मिली। शाखाओं के शिक्षण में एकरूपता लाने, शाखाओं के नियमित निरीक्षण करते रहने का दायित्व निभाने का निर्णय लिया गया। नवीन क्षेत्रों में संघ कार्य के विस्तार हेतु समय देते हेतु सहयोगियों ने अपना-अपना समय लिखवाया। इतिहास के शोधार्थी, विद्वानों से सम्पर्क बनाकर प्रमाणिक तथ्यों के संरक्षण की आवश्यकता भी बताई गई। कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री तथा माननीय संघप्रमुखश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

किसान सम्मेलन :

24 जून को बाड़मेर जिले का किसान सम्मेलन बाड़मेर में सम्पन्न हुआ। जो कृषि से जुड़े हैं वे सभी किसान हैं। किसान वर्ग में जाति या समुदाय का कोई भेद नहीं है। ग्रामीण इलाकों में हम सभी साथ-साथ रहते हैं और कृषि में आने वाली किसी भी प्रकार की अड़चन को साथ-साथ भोगते हैं। किसान जो संपूर्ण समाज का अन्नदाता है, उसका संरक्षण होना आवश्यक है। इसलिए किसानों से जुड़े सभी एक साथ बैठें, एकता में बंधे यह प्रयास होना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन श्री प्रताप फाउण्डेशन ने समाज के विभिन्न वर्गों को परस्पर जोड़ने का कार्य प्रारम्भ किया है। किसान सम्मेलन का आयोजन भी उसी कड़ी में सम्पन्न हुआ। किसान एक व्यापक शब्द है जिसमें सर्व समाज समाहित हो जाता है। हमारी सामुहिक शक्ति की आवाज इतनी मजबूत बने कि सरकार किसानों की उचित मांगों पर उचित निर्णय ले।

इस सम्मेलन में जिले के सभी भागों से हर जाति व समुदाय का किसान बड़ी संख्या में पहुँचा। जिले के विधायक, पूर्व विधायक, प्रधान, सरपंच आदि भी सम्मिलित हुए। सम्मेलन में जन प्रतिनिधियों को श्रोता ही बनाया और सभी समाजों के प्रतिनिधियों को अपने विचार रखने का अवसर दिया गया। वक्ताओं ने इसे अच्छी पहल बताया और परस्पर सहयोग बनाए रखने की बात कही। मानीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी ने सबके एक साथ विचार-विमर्श करने के प्रति खुशी प्रकट की और कहा कि यह केवल बाड़मेर तक ही सीमित न हो, इसे पूरे प्रदेश में फैलाया जाए। कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय किसानों का ग्यारह सूत्रीय माँग पत्र जिलाधीश महोदय तक पहुँचाया गया।

अन्य :

जून माह में एक बालिका व 12 बालकों के शिविर सम्पन्न हुए। जुलाई माह में छुट्टियाँ न होने के कारण मात्र दो ही शिविर हो सके हैं लेकिन छुट्टियों की सुविधा के अनुसार अगस्त व सितम्बर माह में अत्यधिक शिविर होने वाले हैं।

जैसलमेर में जन प्रतिनिधियों की बैठक प्रताप फाउण्डेशन के तहत सम्पन्न हुई और कर्मचारियों की बैठक भी जैसलमेर में हो गई। जैसलमेर ने किसान सम्मेलन करने का भी निश्चय कर लिया।

क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की विस्तार बैठकें भी जगह-जगह सम्पन्न हो रही हैं। कई संभागों में कार्ययोजना बैठकें भी सम्पन्न हो चुकी।

●

चलता रहे मेरा संघ

{उच्च प्रशिक्षण शिविर आलोक आश्रम बाड़मेर में 20 मई, 2022 को माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर द्वारा प्रदत प्रभात संदेश}

बाड़मेर आलोक आश्रम के परिसर में हम सभी लोग एक साधना करने आए हैं। जैसा आपको निर्देश दिया गया, आप लोगों ने माना और 18 तारीख को ही अधिकांश लोग आ गए। अत: आपको अलग-अलग घटों में बांटना था उसमें सुविधा हुई और कल प्रात: 4 बजे के शंख के साथ ही श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिविर प्रारम्भ हो गया। ग्यारह दिन तक, 19 मई से 29 मई तक होने वाले इस यज्ञ में हम सभी आहुति देने आए हैं। कुछ बातें यहाँ बताई जाएगी-हमारा उद्देश्य क्या है? उसके लिए हमारा मार्ग क्या है? हमारे समाज की स्थिति कैसी है? हमारे इतिहास में क्या है? हमारे ध्वज की महत्ता क्या है? हमारी संस्कृति क्या है? अनुशासन क्या है? उत्तरदायित्व क्या है? ये सब बातें संक्षेप में आपको बताई जाएगी। दूसरे शिविरों में भी इन पर जानकारी दी जाती रही है। इस प्रभात संदेश में मैं आप सबका आह्वान करता हूँ कि मेरे साथ चलिए। चलते रहेंगे तो हमारा कल्याण निश्चित है। यह निजी अनुभव है और मेरा यह निजी अनुभव आपका अनुभव बन जाएगा।

मुख्य रूप से जिसमें हम रहते हैं, यह मानव शरीर भगवान ने हमको दिया है। हम इसी में रहेंगे पर क्या भगवान की बात को समझ पाएँगे? क्यों भेजा है? सब कर्ताधर्ता तो भगवान ही है। इस शिविर का आयोजन, अन्य कार्यक्रमों का आयोजन हमारी साधना से फलीभूत नहीं होता है, इसकी फलश्रुति का कारण पूज्य तनसिंहजी की तपस्या है और उनके साथियों की तपस्या है, जो उनके साथ रहे। क्षत्रिय युवक संघ का क्रमिक विकास हुआ है। पहले एक दौर चला था कर्मठता का। कर्म ही सब कुछ है, परिश्रम से सब कुछ पाया जा सकता है। परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। ये बातें हमने सुनी। यह दौर शरीर का दौर था। लेकिन यही पर्याप्त नहीं है। शरीर के बहुत नजदीक अन्त:करण है। चतुष्ट्य है-मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। चतुष्ट्य निर्मल किये बिना न भगवान की बात समझ सकेंगे, न क्षत्रिय युवक संघ की बात समझ सकेंगे। तब तो हम इसे एक सामाजिक कार्यक्रम मानकर पूरा जीवन बिता देंगे। समाज में रहते हैं तो हमारा दायित्व है कि जो हम जानते हैं, जो हमारे पास है, पहले संचित करें फिर लोगों में बाँटें। इसीलिए जगह-जगह शिविर, शाखाएँ अन्य कार्यक्रम रखे जाते हैं।

मन एक बहुत बड़ी सत्ता है हमारी। हम कहते हैं-मैं बोल रहा हूँ, मेरे बोलने में, सुनने में मन का बहुत बड़ा महत्त्व है। मन का नियंत्रण यदि हम नहीं कर पायेंगे तो कठिनाई में पड़ जाएँगे। गीता में कहा है-'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञान: तत्पर: संयतेन्द्रिय'। श्रद्धावान-पहली आवश्यकता है कि ईश्वर में श्रद्धा, समाज में श्रद्धा, क्षत्रिय युवक संघ में श्रद्धा, क्षत्रिय युवक संघ में जो सहयोगी वर्ग है उनमें श्रद्धा, यह पहला सूत्र है ज्ञान की उपलब्धि के लिए। फिर दूसरा है-तत्पर:। सुन लिया, जान लिया पर जाना उस पर कदम नहीं बढ़ें तो हमको यह पता नहीं है कि कदम कहाँ ले जाएँगे। सब लोग दौड़ ही रहे हैं, चल ही रहे हैं लेकिन कहाँ जा रहे हैं। जहाँ जा रहे हैं वह कितना कल्याणकारी है हमारे लिए, इसको समझे बिना यात्रा तो खत्म हो जाएगी, जीवन भी खत्म हो जाएगा लेकिन यात्रा का लक्ष्य हम समझ नहीं पाएँगे। मन का नियंत्रण है, तत्पर है और सयंतेन्द्रिय, अपनी इन्द्रियों का संयम किया हुआ है, उसको ज्ञान मिलता है। तो साधना हम यहाँ कर रहे हैं, करेंगे, वह श्रद्धा की तत्परता, इन्द्रियों के संयम, मन के नियंत्रण के बिना नहीं हो सकती।

मन के बाद आती है बुद्धि। मन को चंचल मानते हैं, बुद्धि भी कम खुराफाती नहीं है। वह हमसे क्या-क्या निर्णय करवा लेती है? हम माने या न माने पर बुद्धि कहती है क्यों लफड़े में पड़ते हो, क्यों जीवन बर्बाद करते हो? लोग तो ऐसा कहते ही हैं, लेकिन अन्दर से भी ऐसी

आवाज आती है। उस बुद्धि पर नियंत्रण कैसे करें? क्षत्रिय युवक संघ का अभ्यास इसका उपाय है। फिर है चित्त। चित्त का मतलब चेतना शक्ति। जो जीवन्त है। जो प्राणवान है, वह प्राण ही ईश्वर है। प्राण पर नियंत्रण, प्राण को देखना, यह बहुत बड़ी साधना है। महात्मा बुद्ध ने सिद्धि के बाद कहा कि आज मैंने यह तथ्य पा लिया है, मैंने उस सत्ता को प्राप्त कर लिया है, उस ज्ञान को प्राप्त कर लिया है जो मेरे से पूर्व अनेक सिद्धों ने प्राप्त किया था। श्वसन क्रिया पर ध्यान दो, यह महात्मा बुद्ध का संदेश है। फिर बहुत लोगों ने यह संदेश दिया। यथार्थ गीता में बताया है कि आधा घण्टा सुबह, आधा घण्टा शाम को बैठकर भजन करना चाहिए। यह भजन क्या है, पहले इसको समझ लें। समझाया है-भज न। दौड़ो मत, रुक जाओ। भगवान की उपासना, मूर्ति की उपासना, गुरु की उपासना जब करें इन सब सत्ताओं को दौड़ने से रोकने का प्रयत्न करें।

हम अच्छे काम करते हैं तो अहंकार भी होता है। अहंकार महत्त्वाकांक्षा से निकलता है और महत्त्वाकांक्षा न हो तो आदमी कोई काम ही नहीं करे। हम सब महत्त्वाकांक्षा रखते हैं, रखनी चाहिए लेकिन किसकी महत्त्वाकांक्षा? व्यक्तिगत नहीं, समष्टिगत और फिर परमेष्टिगत महत्त्वाकांक्षा हो। अहंकार जो हमारा सबसे बड़ा शत्रु है, उसे मारना बाहर कोई नहीं सिखाता। यहाँ संघ में पग-पग पर टोका जाता है, बताया जाता है कि देखो अन्दर क्या भाव आ रहा है। हम जीवन बर्बाद करने नहीं आए हैं। एक दिन भी, एक क्षण भी बेकार जाता है तो भगवान की प्राप्ति में हम दूरी बना देते हैं। हर प्राणी का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है और ईश्वर कहता है कि मैं हर प्राणी के हृदय में विराजमान हूँ तो बाहर कहाँ ढूंढ़ने जा रहे हैं, क्यों मंदिरों में जा रहे हैं? भगवान कहते हैं कि मैंने मंदिर बनाया है हर व्यक्ति के रूप में, उस मंदिर में मैं रहता हूँ, तुम उसके दर्शन करो। दुर्भाग्य यह है कि वे दर्शन किसी पंडित या शास्त्र के बताने मात्र से नहीं किये जा सकते। वह तो क्रियात्मक साधना से ही हमारे समझ में आयेगा। पूज्य तनसिंहजी की पुस्तक साधना पथ के 20वें अवतरण से पढना कि कैसे हम योग साधना कर रहे हैं। संपूर्ण योग की साधना कर रहे हैं।

अष्टांग योग में पहला सूत्र है-यम। बड़ा कठिन है, उसको तो लोग गंभीररता से लेते ही नहीं। पाँच बातें हैं- सत्य बोलें, व्यावहारिक अहिंसा अपनायें, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपिरग्रह। अनावश्यक रूप से संग्रह न करें। ये आप पढेंगे तो पता चलेगा कि हमने अपने आप पर कितना नियंत्रण किया है। यह मार्ग है हमारा अन्तिम लक्ष्य संपूर्ण योग तक पहुँचाने का, जिसको संपूर्ण योग मार्ग (संयोमा) कहा जाता है। यम के पश्चात दूसरा है नियम। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। जो यहाँ के नियम हैं उनका पूरी तरह से पालन करें। सुबह जल्दी उठकर देख रहा था कि क्या-क्या गफलत हो रही है। स्वाभाविक है कि बाहर से हम यह लापरवाही ही तो लेकर आए हैं, जो हमें भटका देती है। तीसरा सूत्र है- आसन। आसन अर्थात जीवन में स्थिरता। योगी लोगों ने हठयोग के अनेकों आसन बताये हैं। 84 प्रकार के आसन बताये गये। वे समय हो तो आप करें लेकिन यहाँ का आसन यह है कि हमारे जीवन में स्थिरता आये, हमारा मन स्थिर हो, शरीर स्थिर हो, प्राण स्थिर हों, हमारा चित्त स्थिर हो, अहंकार हमारे नियंत्रण में रहे।

आसन के बाद है प्राणायाम। प्राण पर नियंत्रण करना। प्राण ही ईश्वर है, ऐसा कहा गया है। ईश्वर की उन्मुखता बनी रहे। फिर प्रत्याहर और फिर धारणा। भगवान की साधना करते हैं तो प्रारम्भ में तो भृकुटि के मध्य ध्यान लगाते हैं। नासाग्र-नाक की सीध में, आँखें खुली रखकर धारणा करते हैं। कुछ लोग इसे ही ध्यान कहते हैं। यह ध्यान नहीं है, ध्यान तो अगली सातवीं स्थिति है। धारणा तक तो हमें करनी पड़ती है, ध्यान तो है जब यह सध जाता है। जब धारणा सध जाती है, सिद्ध हो जाती है तब ध्यान आता है। इसके बाद समाधि लग जाती है। ईश्वर में विलय का मार्ग आ जाता है। यह सब

(शेष पृष्ठ 22 पर)

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

पूज्य श्री तनसिंहजी का जिस समय अवतरण हुआ उस वक्त राजपूत समाज हताशा व निराशा में जीवन जी रहा था। वह किम् कर्तव्य विमूढ की स्थिति में खड़ा कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था। उनमें संगठन अनुशासन और समाज चरित्र का अभाव था। राजपूत समाज की तत्कालीन हालात देखकर व उनके जीवन की दर्द भरी दास्तान को सुनकर पूज्य श्री व्यथित हो गये। राजपूतों की इस हालत को व उनके जीवन की दर्द भरी दास्तान को सुना तो अनेकों ने, पर उनमें से पसीजा कोई नहीं, उन्हें अनसुना कर किम् कर्तय विमूढ की स्थिति में निढाल होकर बैठ गये, क्योंकि उनमें कर गुजरने की शक्ति व क्षत्रियत्व का अभाव था। इस कमी को पूरा करने के लिये, अपनी रुग्ण जाति और समाज को एक व्यवहारिक शिक्षण और मार्गदर्शन देने का निश्चय कर कर्म क्षेत्र में उतरते हुए अपने समाज बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्री तनसिंहजी ने कहा –

''तुम निर्णय में आवश्यकता से अधिक सोचते रहे हो, इतना सोचते रहे, कि करने का समय सोचने में ही निकल गया। इतिहास में अनेक क्षण आए जब कौम को ऐतिहासिक निर्णय लेने थे और ऐसे अमूल्य अवसरों को तुमने हमेशा सोचने में ही खो दिया। महापुरुष जितने हमारे समाज में हुए, वे अकेले ही दुर्भाग्य से लड़ते रहे, उनका समस्त जीवन हमें संघर्ष की प्रेरणा तो देता है, किन्तु आशा की ज्योति नहीं जगाता, इसीलिए आज तुम अपनी संस्कृति और विशेषताओं के प्रति निराश हो गये हो। यही कारण है, जिस अनुष्ठान में तुझे सर्वाधिक लाभ की सम्भावनाएँ हैं, उसी के प्रति या तो तुम असाधारण रूप से उदास हो अथवा अक्षम्य रूप से विरोध कर रहे हो। पर मैंने भी कच्ची कोड़ियाँ नहीं खेली हैं। मैं भी श्रमदान करने वाला वह मजदूर हूँ जो बिना विश्राम पत्थर तोड़ता जा रहा हूँ और तब तक, जब तक कि वह प्रत्येक पत्थर इन्सान नहीं बन जाए। मैंने नये समाज भवन का निर्माण करने की ठानी है, जिसका हर पत्थर अद्वितीय और अमूल्य होगा। मेरा हथोड़ा और मेरी छैनी का वह कमाल मुझे दिखाई दे रहा है, कि इस निराश जीवन में भी मुझे आशा की जगमगाती ज्योति नजर आ रही है।''

पथ विचलित और धर्म विमुख इस कौम को सतोगुण की ओर उन्मुख करने के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी कर्म क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने अपने काम के सम्बन्ध में जानने के इच्छुक जिज्ञासुओं को व शंका की दृष्टि से देखने वालों को आश्वस्त करते हुए जो कहा, उन्हीं की जुबानी –

''मैं क्या करना चाहता हूँ, यह न पूछो, यह बताओ कि तुम क्या चाहते हो? यदि तुम ईमानदारी से अपनी इच्छित वस्तु को बता सकते हो, तो मैं बताऊँगा, वह भी मेरे कार्य से उपलब्ध हो सकती है। मेरा गुरु मंत्र है–हर कार्य अपनी कीमत चाहता है और फल–प्राप्ति के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। इसीलिए मैं अपने सौभाग्य की कीमत जुटा रहा हूँ।''

पूज्य श्री तनसिंहजी ने बताया,–''मैंने छोटी अवस्था में ही समाज की दुख भरी अवस्था देखी। जितने आँसू मैंने अपने और अपने कुटुम्ब के लिए नहीं बहाए, उतने अपने समाज के लिए बहाए। समाज की व्यथा से व्यथित होकर मैंने अपना विद्याध्ययन, विवाह, नोकरी, कुटुम्बपालन और जीवन के समस्त व्यापार समाज के चरण वन्दना में समर्पित कर दिये, पर समाज बन्धुओं से भी मेरी कुछ अपेक्षाएँ हैं।''

पूज्य श्री तनसिंहजी समाज के लोगों से जो भी अपेक्षाएँ रखते हैं, या करते थे, उन्हीं की जुबानी –

''मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता, केवल एक ही बात चाहता हूँ, अन्त:करण में मेरी प्रति विश्वास रखो, मैं

आकाश के तारे तोड़ लाऊँगा। मैं भिखारी हूँ, जो भगवान से सब कुछ आग्रहपूर्वक ला सकता हूँ, पर मुझे यह नहीं सुहाता, कि जिसके लिये यह सब कुछ किया जा रहा है, वही मार्ग का सबसे बड़ा बाधक बने। मेरे समाज बन्धु! तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ। हमारी यह कौम अजेय है। कोई शक्तिशाली से भी शक्तिशाली इसे पराजित नहीं कर सकता। इसे केवल एक ही शक्ति पराजित कर सकती है, और वह है विभीषण की शक्ति। इतिहास के सभी पन्नों को मैंने टटोल डाला है और मैं इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ, कि यह रहस्य सोलहों आना सत्य है। आज के युग को भी देख लो न! जो कोई और जहाँ कहीं, भी हमारी इस जाति का शोषण हो रहा है, उस शोषण में शत्रु के साथ हमारे किसी न किसी विभीषण का अवश्य हाथ होगा। भविष्य में भी यदि कभी इस जाति का पतन होगा तो उसमें भी उसी के किसी विभीषण का सहयोग होगा। मैं इसीलिए तो तुम्हें बार-बार कह रहा हूँ कि जब कभी कोई विभीषण बनता है, तो पहले इसी प्रकार उदासीन बनकर फिर विरोध करता है। किन्तु विरोध में वह कभी जीत नहीं सकता, तब वह अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बनाकर शत्रु से मिलता है और यही है हमारी कौम के सर्वनाश की दर्दनाक कहानी का प्रारम्भ।

''फिर भी मैंने काल और समय से बहुत कुछ सीख लिया है। अब मैं जानता हूँ विभीषणों के साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिए। इतिहास के निर्णायक चौराहे पर विभीषणों और मेरे सहयोगी साथियों की अन्तिम मुठभेड़ होगी और तभी पता लगेगा, कि हमने हमारे आखिरी दुर्भाग्य पर भी किस शान से विजय प्राप्त कर ली है। तुम सहायता दे सकते हो तो दो वर्ना मुझे अपने होनहार साथियों पर पूरा भरोसा है, कि एक दिन वह तुम्हारी निष्क्रियता अथवा विरोध का पूरा मूल्य चुकायेंगे।''

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंहजी को नियत कर्तव्य कर्म करने कर्म क्षेत्र में उतरते देख अनेकों सहयोगी उनके साथ हो गये। पूज्य श्री ने कर्म भूमि में ज्यों ही कार्य शुरू किया तो उनके सामने कई चुनौतियाँ आ खड़ी हुई। पूज्य श्री जानते थे कि यह ईश्वरीय कार्य है, इसलिए वे अपने काम के प्रति पूर्व आश्वस्त थे। पूज्य श्री तनसिंहजी कहते थे कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य-ईश्वरीय कार्य है, जो होकर रहेगा। एक दुर्लभ अवसर आया है, इसमें सहयोगी बनकर यश के भागी बनो। यदि तुम साथ नहीं दोगे तो तुम्हारी जगह कोई दूसरा सहयोगी बनकर यश का भागी होगा।

हम नहीं जानते ईश्वर क्या चाहता है। पूज्य श्री तनसिंहजी जानते थे कि ईश्वर की क्या चाह है। ईश्वर की चाह के अनुरूप वे लोगों को साथ लेकर कर्म करने लगे। पूज्य श्री अपने काम के प्रति पूर्ण आश्वस्त थे। इस आश्वस्तता के साथ उन्होंने समाज बन्धुओं को आशा भरा संदेश देते हुए जो कहा, उन्हीं की जुबान से –

''मैं कभी-कभी डरता भी हूँ, जीवन के इस जुए में मैंने अपने ही सुख, सम्पत्ति और वैभव को दाँव पर नहीं रखा है, किन्तु साथ ही असंख्य लोगों के जीवन को भी दांव पर रखा है। कहीं ऐसा न हो जाए, कि तुम्हारा यह कहना सच निकल जाए, कि समय ही इसका निर्णय करेगा। तो सुन लो! मैं भी ललकार कर कहता हूँ-समय ही इसका निर्णय करेगा, कि कौन ठीक था। मैं जानता हूँ, पूजा की एक भी पंखुड़ी व्यर्थ नहीं जाती, बलिदान का कोई भी पहलू निरर्थक नहीं जाता, इसलिए हो नहीं सकता, कि असंख्य लोगों का यह बलिदान व्यर्थ जायेगा। मेरा अब तक का डर केवल इस बात का परिचायक था, कि मुझे मेरे भीतर बसने वाले मेरे भगवान पर पूरा भरोसा नहीं था। साधना द्वारा अब मैं आश्वस्त हूँ-मैं अब पूर्ण निर्भय हूँ, पूर्ण अजेय हूँ। यदि तुम चाहते हो कि बहती हुई गंगा में हाथ धो लो, तो शीघ्रता करो, अन्यथा यह गंगा तो बहेगी ही, क्योंकि भारत वर्ष में असंख्य भागीरथ पैदा हो गए हैं। भारत और मानवता का भविष्य उज्ज्वल है, इस पर किसी अज्ञान और अन्धकार का पर्दा अब पड़ नहीं सकता। हम अपने लक्ष्य के लिए कृत संकल्प हैं और इस जीवन में नहीं, तो कभी न कभी हमारी विजय होगी ही।''

(क्रमशः)

गतांक से आगे

छोड़ो चिन्ता-दुश्चिन्ता को

– स्वामी जगदात्मानन्द

नेताओं का दृष्टिकोण :

कुछ लोग पूछ सकते हैं कि यहाँ ऐसे विस्तृत उद्धरण क्यों दिए गए हैं? प्रश्न उचित है। आध्यात्मिक आदर्शों में पहले से ही दृढ़ श्रद्धा रखने वालों को इनकी कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु यह आधुनिक काल के ऐसे शिक्षित लोगों को सच्चाई का स्पष्ट रूप से बोध कराने के लिये है, जो एक ओर तो धर्मभाव से रहित हैं और दूसरी ओर धर्म पर आक्रमण करना अपनी वैज्ञानिक दृष्टि का परिचायक मानते हैं। आज के शिक्षित वर्ग ने इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या को पूर्णरूपेण स्वीकार कर लिया है। राष्ट्र के राजनैतिक क्रिया-कलाप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भौतिकवादी दृष्टिकोण से प्रभावित हो गए हैं। हमारे नेताओं और देशभक्तों ने भारत की स्वाधीनता के पूर्व देश को आजाद कराने के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी थी, ताकि देश का धर्म तथा संस्कृति सुरक्षित और कायम रह सके। पर आजादी मिलने के बाद क्या हुआ? हिन्दू समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले तथा स्वाधीनता-आंदोलन में भाग लेने वाले राजनेताओं के मन में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के प्रति नि:सन्देह बड़ा आदर भाव था, परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि वे लोग किसी धार्मिक या आध्यात्मिक विश्वास से रहित थे। उन दिनों देश की बागडोर सम्भालने वाले वरिष्ठ नेताओं के विषय में श्री मस्ती वेंकटेश अयंगार बड़े तटस्थ भाव से लिखते हैं, 'हममें आजादी की लालसा क्यों थी? भारत के पास अपना निजी चरित्र, अपनी विशिष्ट संस्कृति है। कोई पराधीन देश अपने स्वत्व का विकास नहीं कर सकता। यदि हमारे देश को सभी क्षेत्रों में अपना विकास करना था, तो हमें राष्ट्रीय जीवन का गठन करना ही था। मात्र इसी प्रयोजन से हमारे नेताओं ने राजनैतिक आजादी हेतु संघर्ष किया। राजनैतिक रूप से स्वाधीन किसी देश का इससे भी अधिक हित तब होता, जब वह सांस्कृतिक स्वाधीनता की प्राप्ति कर लेता। परन्तु हमारे दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ।'

गाँधीजी का यह प्रस्ताव था कि देश को स्वाधीनता दिलाने वाली कांग्रेस पार्टी को राजनैतिक दल के रूप में बने रहकर देश पर शासन नहीं चलाना चाहिए। परन्तु हमारे नेताओं ने गाँधीजी के इस परामर्श को अनसुना कर दिया। कांग्रेस सत्ता में आयी और पण्डित जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रधानमंत्री बने। नेहरू एक कुलीन परिवार में जन्मे थे। वे स्वभावत: एक आदर्शवादी थे। इंग्लैण्ड में शिक्षित होने के कारण वे उस समय के उदारवादी राजनैतिक चिन्तकों से प्रभावित थे। एक लगभग साम्यवादी तंत्र के प्रति सहानुभूति-भाव लेकर वे स्वदेश लौट आए। वे लोगों के जीवन के अभावों के प्रति संवेदनशील थे। पर जन्म से हिन्दू होने के बावजूद, हिन्दू धर्म में उनका विश्वास न था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता के रूप में वस्तुत: वे महात्मा गाँधी के दाहिने हाथ के रूप में काम करते थे, परन्तु गाँधीजी के जीवन को प्रेरित करने वाली भावनाओं और विचारों के लिये उनके मन में कोई जगह न थी। गाँधीजी कहा करते थे, 'यह संसार ईश्वर नामक एक दिव्य शक्ति से संचालित होता है।' जवाहरलाल नेहरू को ईश्वर से कोई प्रयोजन नहीं था। महात्मा गाँधी ने कहा था, 'मैं हिन्दू हूँ। मैं हिन्दू धर्म का आचरण इसलिए करता हूँ क्योंकि यह किसी अन्य धर्म का खण्डन नहीं करता। इसमें सभी धर्मों का सार समाहित है।' पर नेहरू जी का हिन्दू धर्म से गहरा परिचय नहीं था। महात्मा गाँधी प्रतिदिन संध्या को एक प्रार्थना-सभा का आयोजन किया करते थे। लेकिन पता नहीं पं. नेहरू प्रार्थना को उपादेय समझते थे या नहीं। महात्मा गाँधी ने जन-भावनाओं को समझकर, जनता के कल्याण हेतु कार्य करने वाली राजनैतिक प्रणाली को 'रामराज्य' कहा। जब एक बार किसी ने रामराज्य की ओर संकेत किया, तो नेहरू ने कहा था, 'रामराज्य क्या

है? मैं उसे नहीं जानता।' कभी-कभी पाश्चात्य चिन्तक बौद्ध धर्म की यह कहकर प्रशंसा करते हैं कि वह एकमात्र ऐसा धर्म है, जो बौद्धिक रूप से विश्वसनीय है। जवाहरलाल नेहरू बुद्धिवादी थे। उन्होंने इसे बिल्कुल उपयुक्त पाया होगा। उनके मतानुसार शायद बुद्ध के आविर्भाव से ही भारत का इतिहास प्रारम्भ हुआ। इसलिए सारनाथ का सिंह-स्तम्भ हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है और राष्ट्रीय ध्वज के मध्य में अशोक-चक्र है। जब संविधान सभा ने भारत की स्वाधीनता दिलाने के लिये ईश्वर को धन्यवाद देने का प्रस्ताव रखने का विचार किया, तो पं. नेहरू को यह पसन्द नहीं आया और उस विचार को त्याग दिया गया। गाँधीजी को राष्ट्रपिता इसलिए कहा गया, क्योंकि उन्होंने राष्ट्रसेवा में ही अपना जीवन अर्पित कर दिया था। गाँधीजी का यह विश्वास था कि ईश्वर की सत्ता है और राम ईश्वर के ही एक रूप हैं। पर गाँधीजी के इस विचार के लिये भारत के संविधान में कोई जगह नहीं थी।

आज भी भारतीय जनता ने ईश्वर के विचार को नहीं त्यागा है। ऐसा नहीं है कि इस विचार ने हमेशा मानवता का भला ही किया हो। तथापि अधिकांश भारतीय जनता ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करती है। पं. नेहरू देश के नेता बन गए, फिर भी उन्होंने जनता के इस विचार का सम्मान नहीं किया।

पं. नेहरू एक आदर्शवादी व्यक्ति थे, जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखे बिना भी ईमानदार और सत्यनिष्ठ बने रह सकते थे। कुल मिलाकर वे अपनी कथनी के अनुसार खरा जीवन बिताते थे। परन्तु कोरा आदर्शवाद प्रशासन को लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकता। प्रधानमंत्री के रूप में पं. नेहरू के साथ कई अन्य राष्ट्रीय नेता भी थे, परन्तु सबके विचार आपस में मेल नहीं खाते थे। कांग्रेस में कार्य कर चुके कुछ नेताओं को भय था कि पं. नेहरू के नेतृत्व में कुछ समय बाद भारत में हिन्दुओं की स्थिति बिगड़ जाएगी। अत: उन लोगों ने हिन्दू महासभा नामक एक संगठन बनाया। राजाजी (राजगोपालाचारी) ने पं. नेहरू का साथ छोड़कर अपना एक दल बना लिया। यद्यपि वल्लभभाई पटेल ने उनका साथ नहीं छोड़ा, तथापि दोनों में मतभेद थे। सन् 1964 में पं. नेहरू दिवंगत हो गए और कांग्रेस विभाजित हो गयी। बाद में कई विभाजनों के बाद कांग्रेस छ: खंडों में बँट गयी। पं. नेहरू के जीवन काल में लोग अपने व्यवहार से उन्हें अप्रसन्न करने में संकोच करते थे, क्योंकि वे उनकी सत्यनिष्ठा का आदर करते थे। पं. नेहरू की मृत्यु के बाद उन्हें गलत कार्यों से कोई भय या संकोच नहीं रह गया। अतीत काल में लोग इस विश्वास के कारण बुरे कर्मों से विरत रहते थे कि ऐसे कर्म करने पर भगवान उन्हें दण्ड देंगे। इसी कारण वे सतर्क रहा करते थे। प्राय: एक उपदेवता के समान माने जाने वाले पं. नेहरू की मृत्यु के बाद हमारे राजनेताओं ने बेरोक-टोक यथेच्छाचार शुरू कर दिया। वैसे उनमें कुछ भले लोग भी थे, परन्तु बाकी लोग वैसे न थे। कुल मिलाकर राष्ट्रीय जीवन में ऐसा ह्रास आया, जिसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की गयी थी।

ईसाई और मुसलमान भाइयों के नेतागण स्वाभाविक तौर पर अपने धर्म और संस्कृति के विषय में गर्वित थे और अपने अनुयायियों के बीच अपने विश्वास या पंथ की रक्षा करने के भाव को फैलाने हेतु कटिबद्ध थे। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सभी धर्म उदारवादी दृष्टिकोण रखते हैं तथा जहाँ सभी धर्मों का आदर किया जाता है। इसी देश में सम्राट अशोक ने धार्मिक सद्भाव का संदेश फैलाया। परन्तु भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं को विद्यालयों में उनके धर्म की शिक्षा देने हेतु सरकार से कोई आर्थिक सहायता इस आधार पर नहीं मिली, क्योंकि हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष थी। श्री एच.बी. कामथ ने एक बार दु:ख व्यक्त करते हुए कहा था, 'राजकीय अनुदान प्राप्त करने वाले शैक्षणिक संस्थाओं में धार्मिक शिक्षण पर रोक लगाने वाले अनुच्छेद 28 के पारित होते समय मैंने एक संशोधन प्रस्तुत किया था कि ''नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षण'' पर यह रोक नहीं होनी चाहिए। पर जब इसे नामंजूर कर दिया गया तब मुझे बड़ा दु:ख हुआ। यह भविष्य के लिए घातक सिद्ध हुआ। भारत के राजनीतिक जागरण के पूर्व

एक ज्योतिर्मय धार्मिक-आध्यात्मिक पुनर्जागरण हुआ था। वस्तुत: इसी पुनर्जागरण ने हमारे स्वाधीनता-संघर्ष को आधार तथा नींव प्रदान की थी। यदि हमारी लोकतांत्रिक राज-व्यवस्था नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से अनुप्राणित होती रहती, तो सब कुछ ठीक चलता रहता।'

जड़ पर कुठाराघात :

हमें अपने धर्म और संस्कृति के उदात्त विचारों को समाज के उन पिछड़े वर्गों में फैलाना चाहिये था, जो कई शताब्दियों से उसका लाभ प्राप्त कर पाने से वंचित रहे हैं। यह कैसी विसंगति है कि हमारे अपने नेतागण ही इस प्रस्ताव पर गला फाड़कर चिल्ला पड़े थे- 'हम धर्म और कर्मवाद के विचारों से धोखा खा चुके हैं। धर्म में छल-कपट, अन्धविश्वास और शोषण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।' धर्म-निरपेक्षता, वैज्ञानिकता और बुद्धिवाद की दुहाई देते हुए जनता को उदात्त नैतिक और आध्यात्मिक विचारों से परिचित होने के अवसर से वंचित करके ये नेतागण स्वयं ही दलित जनता के शोषण के माध्यम बन गए। यद्यपि हिन्दू समाज में एकता स्थापित करने का तब तक स्वर्णिम अवसर था, परन्तु उसे समृद्ध करने के बजाए, कतिपय लोगों ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए एक विद्रोही वृत्ति को ही प्रोत्साहित किया जिसने अप्रत्यक्ष रूप से अनन्त: दास्य वृत्ति के भयंकर रूप को जन्म दिया। अपने निजी धर्ममत का प्रचार-प्रसार करने और अन्य लोगों का असली रूप दिखाने में लगे हुए कुछ धर्मों के अनुयायी अपने बन्धुओं में एक भयावह राजनैतिक भावना का संचार करने में लगे रहे और धर्म-परिवर्तनों के जरिये अपने वर्ग की शक्ति को बढ़ाने में लगे रहे। इस प्रकार के सरकार से विभिन्न प्रकार के विशेषाधिकारों तथा लाभों को प्राप्त करने में सफल रहे। हमारे नेताओं की दूरदर्शिता की कमी के कारण देश की जनता के धार्मिक विश्वास कमजोर होते गए और इसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर हिन्दू जनता के बीच आन्तरिक फूट को प्रोत्साहित किया। धर्म तथा सांस्कृतिक मूल्यों की बलि चढ़ाकर इन नेताओं ने सामाजिक संरचना की प्राणशक्ति को ही निस्तेज कर दिया और राष्ट्रीय इमारत की संरचना को ध्वस्त कर दिया।

अन्धविश्वास ?

विज्ञान के अधकचरे ज्ञान को प्राप्त करके, यथार्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने का दावा करने वाले और किन्हीं विशेष राजनीतिक सिद्धान्तों में ही निष्ठा रखने वाले नेतागण ईश्वर-विषयक श्रद्धा, विशेषकर धर्म, आत्मा, आदि को अन्धविश्वास या पाखण्ड कहते हैं। आज धर्म के नाम पर कुछ अनाचारों के बारे में ऐसी आलोचनाओं को मान भी लिया जाए, तो भी क्या उनकी सारी आलोचनाओं को वैध ठहराया जा सकता है? यह बात स्पष्ट है कि धर्मरूपी पवित्र वृक्ष के महान फलों के रूप में श्रेष्ठ चरित्र के व्यक्ति उत्पन्न हुए हैं। यदि कोई ऐसे श्रेष्ठ लोगों के चरित्र तथा उनकी सुदृढ़ नैतिकता की प्रेरणा के मूल का गहन अध्ययन किए बिना ही उनके दृष्टिकोण को अन्धविश्वास करार देता है, तो उसका अपना कथन ही उसकी मानसिक संकीर्णता तथा एक तरह के अन्धविश्वास का ठोस प्रमाण है। फिर यह तर्क भी निराधार है कि विज्ञान धर्म या धार्मिक विश्वासों के विरुद्ध ही चलता रहा है। यह सच है कि कुछ वैज्ञानिक आविष्कारों ने कुछ अन्धविश्वासों को मिटा दिया है। परन्तु विश्व के महान धर्मों द्वारा प्रचारित सिद्धान्त और एक सामाजिक प्राणी, मानव, द्वारा पालन किए जाने वाले नैतिक मूल्य विज्ञान द्वारा किए जा रहे सत्य की जाँच-पड़ताल की सीमा के बाहर हैं। कोई भी समझदार व्यक्ति सत्य के प्रति, न्याय का सम्मान, सहायता का भाव, आत्मसंयम आदि सद्गुणों का विरोध नहीं करेगा। धर्म की मूलभूत शिक्षा यही है कि क्षणिक सुखों के लिए मनुष्य को इन सद्गुणों की उपेक्षा करके हीन तथा भ्रष्ट जीवन नहीं बिताना चाहिए। इन सद्गुणों के पूर्ण विकास के लिए साधारण मनुष्य के अनुभव से परे अतीन्द्रिय सत्य या ईश्वर में विश्वास अत्यावश्यक है। विश्व के महान सन्तों ने इन सिद्धान्तों की अनुभूति करके अपने जीवन में उन्हें सिद्ध कर दिया है। प्रसिद्ध इतिहासकार अर्नाल्ड टॉयन्बी ने घोषणा की, 'भारतीय धर्म एकांगी भावों वाले नहीं हैं। वे इस बात को स्वीकार करने को राजी हैं कि इस रहस्य को जानने के

लिए अन्य पथ भी हो सकते हैं। मुझे निश्चित रूप से लगता है कि इस मामले में वे बिल्कुल सही हैं। भारतीय धर्म-भावना का यह उदार भाव सभी धर्मों के मनुष्यों के लिए मुक्ति का मार्ग है। और इस युग में यदि हमें विनाश से बचना है, तो हमें एक परिवार के रूप में रहना सीखना होगा।' इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि परम सत्य के रूप में स्वीकृत ईश्वर, आत्मा आदि की धारणाएँ व्यक्तियों के चरित्र-गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

डब्ल्यू. एन. सलीवान कहते हैं, 'विज्ञान सत्य के केवल एक आंशिक पहलू से सरोकार रखता है। यह बात नितान्त आधारहीन है कि विज्ञान जिन तथ्यों की उपेक्षा करता है उनमें सत्य कम है और जिनको स्वीकार करता है वे ही सत्य हैं। अब हमें यह शिक्षा नहीं दी जाती कि सत्य का ज्ञान प्राप्त करने का वैज्ञानिक तरीका ही एकमात्र वैध तरीका है। विज्ञान के कर्णधार मानो एक विचित्र उत्साह के साथ इस बात पर बल दे रहे हैं कि विज्ञान हमें वास्तविकता का एक आंशिक ज्ञान ही प्रदान करता है और विज्ञान द्वारा उपेक्षित हर चीज को मिथ्या समझने की अब हमें कोई आवश्यकता नहीं।'

प्रो. लेकोम्टे कहते हैं, 'केवल असामंजस्य चाहने वालों के मन में ही विज्ञान तथा श्रद्धा के बीच असामंजस्य रहता है।'

यहाँ डब्ल्यू. जे. सोलज की भी उक्ति का स्मरण करना उचित होगा, 'दर्शन और धर्म के मामलों में विज्ञान मध्यस्थ नहीं है। तत्त्व-सम्बन्धी प्रश्नों के बारे में अन्तिम निर्णय सदैव धर्म और दर्शन के पास ही होना चाहिए।'

परम तत्त्व :

अल्डस हक्सले के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'Ends and Means ('साध्य और साधन') में उनके ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं, 'अपने विश्वासों के आलोक में ही हम परम तत्त्व के स्वरूप के विषय में अपनी सही तथा गलत धारणाओं का निर्माण करते हैं, और अपनी सही तथा गलत धारणाओं के आलोक में हम अपना आचरण निर्धारित करते हैं। ऐसा हमारे निजी जीवन के सम्बन्ध में ही नहीं, अपितु राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में भी घटित होता है। अत: हमारे दार्शनिक विश्वास अप्रासंगिक न होकर, हमारे सभी कर्मों के अन्तिम निर्णायक तत्त्व हैं।'

सभ्यता की बर्बरता :

आज जीवन के हर क्षेत्र में हम इस विश्वास का अभाव पाते हैं। सर्वत्र, और विशेषतया शिक्षित लोगों में, न केवल भगवान या न्याय या नैतिकता में विश्वास का अभाव दृष्टिगत होता है, अपितु अपने आप में भी विश्वास का अभाव दिखता है। हमारे प्राय: सभी राजनेता विश्वास करते हैं कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सतत् विकास राष्ट्रीय प्रगति और सबलता का साधन है। स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ तथा राजनीतिक जरूरतें हमारे देश को अपनी परम्परा से दूर ले जा रही हैं। ८० वर्ष पूर्व जहाँ हमारे देश में केवल तीन विश्वविद्यालय थे, वहीं आज उनकी संख्या करीब 150 है। हमारी शिक्षा-प्रणाली में विज्ञान और तकनीकी विषयों ने गौरवपूर्ण स्थान ले लिया है। यहाँ तक कि बालिकाएँ भी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की ओर आकर्षित हैं। केवल तथ्यों का ज्ञान एकत्र करने पर ही केन्द्रित हमारी शिक्षा-प्रणाली चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण करने में असमर्थ है। जीविका-निर्वाह के लिए कुछ कौशल प्राप्त कर लेना ही शिक्षा का एकमेव उद्देश्य माना जाने लगा है। व्यक्तित्व के समग्र विकास के साथ शिक्षा का कोई सरोकार नहीं है। जीवन की सुख-सुविधाओं में वृद्धि या मनुष्य की निम्न प्रवृत्तियों की तृप्ति को ही जीवन-स्तर में सुधार माना जाता है। आज के युवक का एकमात्र लक्ष्य एक ऐसी नौकरी प्राप्त करना है, जिसमें परिश्रम कम-से-कम और पारिश्रमिक अधिकतम हो। छात्र कई बार हड़ताल करके अपनी परीक्षाएँ स्थगित करवा लेते हैं और परीक्षाओं की संख्या भी घटवा सकते हैं। वे छुरा या बेल्ट दिखाकर परीक्षकों को धमकी देते हैं। कहीं-कहीं तो परीक्षाएँ पुलिस की निगरानी में करानी पड़ती हैं। परीक्षकों को रिश्वत का प्रलोभन देकर छात्र उच्च श्रेणी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी शिक्षा के बाद नौकरी पाकर ये

(शेष पृष्ठ 17 पर)

खोये हैं प्रश्न

– गिरधारीसिंह डोभाड़ा

श्रद्धेय पूज्य तनसिंहजी के एक गीत की पंक्ति है– 'खोये हैं प्रश्न मैंने उत्तर न खोजे' सामाजिक संदर्भ में सोचें तो कौनसे प्रश्न हैं जो खो गये हैं, उनके उत्तर ही नहीं खोजे गये हैं? क्षत्रिय वृति, राजपूत-जाति सृष्टि के निर्माण से, वैदिक काल से एक गौरवशली जाति रही है। क्षत्रिय सृष्टि के निर्माण से ही संसार का शासन करते रहे हैं। क्षत्रिय हमेशा, प्रजापालक, प्रजा रक्षक रहे हैं। 'परित्राणाय साधूनाम्' उनका लक्ष्य रहा है, उनका कर्तव्य रहा है, उनका स्वधर्म रहा है। स्वधर्म पालन से ही वे प्रजापालक और प्रजारक्षक रहे हैं और इसी कारण से संसार ने उनको शासक के रूप में स्वीकारा था। लेकिन आज क्षत्रिय न शासक हैं, न प्रजा पालक हैं, न प्रजा रक्षक हैं। आज तो वे क्षत्रिय कहलाने जैसे नहीं रहे। ऐसा क्यों हुआ? अगर हम अपने आपको क्षत्रिय मानते हैं तो ऐसी दशा होने का कारण क्या है, क्या हमने अपने से इस प्रश्न को पूछा है? कभी अपना आत्मावलोकन किया है? यदि हमारे कभी ऐसा प्रश्न ही नहीं उठा तो फिर उसका उत्तर ही क्यों खोजेंगे? जो व्यक्ति मृत्यु-शय्या पर है वह सोचने और उठने की चेष्टा ही कैसे करेगा? जिस व्यक्ति के दिल में उठने की चाह है,वह तो अपनी रुग्णावस्था का कारण ढूंढेगा और उसके इलाज को ढूंढ निकालेगा।

परशुराम ने कई बार जग को क्षत्रिय विहीन करने का प्रयास किया लेकिन नहीं कर सके। क्यों? क्योंकि उस समय श्री राम, श्री लक्ष्मण, विदेह राजा जनक जैसे स्वधर्म पालक क्षत्रिय संसार में थे। जो क्षत्रिय कर्तव्यच्युत हो गये थे, प्रजापालक नहीं रहे उनका ही भगवान विष्णु के अंशावतार परशुराम ने संहार किया था। जो क्षत्रिय 'परित्राणाय साधूनाम्' की राह पर थे, उनका तो वंश बढा था। उन्होंने अपने जीवन की सार्थकता स्वधर्म पालन कर निभाई थी।

थोड़ी सी संख्या में आये यवनों, अंग्रेजों ने हम पर विजय पा ली। इसके लिये क्या हमने कभी अपने आपसे पूछा है-क्यों? हम हमारे देश में बड़ी संख्या में और वीरता में उनसे बढकर होते हुए भी पराजित हुए, क्यों? क्या हमने कभी अपने आप से पूछा है? गीतों की पंक्तियाँ कहती हैं–

'यवनों ने गद्दारों ने फिर फूट डालकर कटवाया।
अंग्रेजों ने आकर हमको हाँ हुजूर ही सिखलाया।।'
'बाबर तेरे प्याले टूटे बता कितने।
पर सरहदी का अफसोस लिए फिरते हैं।।
'दुष्टों के हाथों पड़कर मेरी संस्कृति है अकुलाती।
अहंभाव के बीच वीरता पड़ी हुई बिललाती।।'

उन्होंने कूटनीति से हमारे में से कुछ स्वार्थी, अहंकारी नमकहरामी लोगों, जैसे कश्मीर का आम्भी, मालवा का सरहदी, पंजाब का हेहुलराय को अपने पक्ष में मिला लिया और हमारे ही वीरों को पराजित करने में हथियार की तरह काम में लिया। स्वार्थ का, गद्दारी का क्या कारण था और सबको एक सूत्रता में बाँधने का कभी सोचा? स्वार्थ, अहंकार और गद्दारी का उत्तर हमने कभी सोचा नहीं, उपाय किया नहीं, इसलिए ये वृत्तियाँ चलती ही रही।

अंग्रेजों के राज में तो हम 'धर्म-भ्रष्ट, कर्तव्यहीन बन' कर जीने लगे। अंग्रेजों के जाने के बाद 'अपने हाथों से घर जलवा कर' रास्ते पर लेटने लगे। अर्थात् हमारी आजीविका का साधन भी हमारे पास नहीं रहा। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि इस युग में भी हम संगठित नहीं रह सके। 'संघेशक्ति कलौयुगे' का मंत्र हम भूल चुके थे। अत: शक्तिहीन हो गये और 'शक्ति शौर्य जो पास नहीं तो विजय नहीं जयकारों में, निर्बल की नैया डगमग करती दोष कहाँ पतवारों में।' अपने आदर्श पर चलना भूल गये पर 'जिनके हैं नहीं सिद्धान्त मरना जीना क्या जाने' जीवन की सार्थकता क्या है, यह भूल गये। हमारी कर्तव्यहीनता

के कारण हमने इतिहास की कई चोटें खाई हैं जिनके दाग हम आज भी लिए फिरते हैं। इसका दर्द आज भी सीने में लिए फिरते हैं।

लेकिन अब स्थिति बदली है। ऊषा ने करवट ली है। नव प्रभात का सूर्य उदित हुआ है। मरुभूमि में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' नामक कमल खिला है। उस पर भँवरे गुंजन करने लगे हैं। शमा जल चुकी है, परवाने बलि होने को उमड़-उमड़कर आ रहे हैं। संघ ने शंख बजा दिया है-सत्य की अब जय होगी ही। अब केशरिया कर लिया है। आज संघ का शंख बजा है, घर-घर में आह्वान हो रहा है। महलों का वैभव ठुकरा कर गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी रण गीत, 'झनकार' के गीत गूंजने लगे हैं। शाखाओं में, शिविरों में रणगीत गा रहे हैं, क्षत्रियत्व के संस्कार, कर्तव्य पालन के गुणों का निर्माण कर रहे हैं, अपने आचरण में ढाल रहे हैं। क्षत्रिय किशोरियाँ, ललनाएँ, महिलाएँ भी पीछे नहीं हैं, वे भी ललकार रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने भूतकाल की भूलों, हमारी लगी चोटों के प्रश्न को पूछा है, उसके उत्तर को खोजा है। 'वो कौम न मिटने पायेगी, ठोकर लगने पर हर बार उठती जायेगी।' कौनसी कौम? 'कष्टों में जिस कौम के बन्दे जंगल-जंगल छानेंगे, भोग और ऐश्वर्य आदि की मनुहारें ना मानेंगे, घर-घर दीप जलाएँगे।' हमारी भूलें क्या रही हैं?

हम कौन हैं- सर्वप्रथम भूल तो यह रही है कि हम भूल गए थे कि हम कौन हैं? हमने क्षत्रिय जाति में क्यों जन्म लिया है? हमने जन्म लिया नहीं है बल्कि जगतपिता परमेश्वर ने हमारे पूर्व जन्मों के अच्छे कर्मों के फलस्वरूप हमें इस महान क्षत्रिय कुल में जन्म दिया गया है। क्षत्रिय के लिए परमेश्वर ने कर्तव्य भी निश्चित किया है जो उसका स्वधर्म है। उसी स्वधर्म पालन करने से क्षत्रिय ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है। उसी में ही उसके जन्म की सार्थकता है। वह धर्म है-'परित्राणाय साधूनाम्'। अन्याय, अनीति, असत्य, अधर्म, अज्ञान, अंधकार, अहं का नाश करके न्याय, नीति, धर्म, सत्य की स्थापना करना, ज्ञान और प्रकाश फैलाना तथा इनकी रक्षा करना ही क्षत्रिय का स्वाभाविक कर्म है और यही उसका स्वधर्म है। श्री कृष्ण ने गीता द्वारा अर्जुन को क्षत्रिय के स्वधर्म का पालन करने का जो उपदेश दिया वही श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना का आधार है जिसमें निष्काम कर्म, ज्ञान और भक्ति समाहित है। शाखाओं, शिविरों में श्री क्षत्रिय युवक संघ अपनी सामुहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा निष्कार्म कर्म, ज्ञान और भक्ति के मार्ग का संस्कार डालकर क्षत्रियों को उनके स्वधर्म पालन के मार्ग पर ले जा रहा है। स्वधर्म पालन की उसके जीवन की सार्थकता है, इसके लिए उसे जागृत करता है, इसी में क्षत्रिय कुल का हित है।

असंगठित शक्ति- हमारे पूर्वज महान योद्धा थे। शूरवीर, दानवीर, दक्ष थे। संसार की किसी जाति में ऐसे वीर नहीं हुए हैं जिनका सिर कटने पर भी उनका धड़ मीलों तक, घंटों तक तलवार चला रहा हो और दुश्मनों का संहार कर रहा हो। फिर भी उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ा था। ऐसा क्यों हुआ? स्पष्ट है कि हमने संगठित होकर आक्रान्ताओं का, दुश्मनों का कभी भी सामना नहीं किया। मोहम्मद गौरी दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज चौहान से कई बार पराजित होता रहा पर 1192 में जब वह बड़ी सेना लेकर आया पृथ्वीराज को पराजित कर उनकी हत्या कर दी। फिर वह आगे बढा और जयचन्द को भी पराजित किया। भूल रही कि संगठित होकर नहीं लड़े। बाबर के सामने युद्ध के लिए महाराणा सांगा के नेतृत्व में अनेक राजा साथ आकर लड़े। बाबर हार ही रहा था तब उसने संधि का प्रस्ताव भेजा। राणा सांगा ने अपनी ओर से सरहदी को संधि की बात के लिए भेजा। सरहदी जो बाबर से प्रस्ताव लेकर आया वह राणा को मंजूर नहीं था। इस बात को सरहदी अपना अपमान मानकर अपनी सेना के तीस हजार राजपूतें को लेकर बाबर की सेना में जा मिला। राणा पराजित हुआ। भारत में से इस्लामी सत्ता को उखाड़ कर राजपूत सत्ता स्थापित करने के मंसूबे को सफलता नहीं मिली। एक की महान आकांक्षा को दूसरे के अहं और स्वार्थ ने हमेशा के लिये दफना दिया। मारवाड़

के स्वामी भक्त वीर दुर्गादास, मेवाड़ के महाराणा राजसिंह और महाराष्ट्र के छत्रपति शिवाजी ने संगठनका प्रयास किया पर अपनी-अपनी अलग अपेक्षाओं के कारण कार्यरूप में परिणित नहीं हो सका।

श्री क्षत्रिय युवक संघ संगठन का कार्य कर रहा है। अपने स्थायी संगठन का उपाय भी खोज लिया। वह उपाय है स्वधर्म पालन। उस संगठन की राह है-एक ध्येय, एक मार्ग, एक नेता, एक ध्वज और समान सतोगुणीय संस्कार, सतोगुणीय विचार और सद्आचरण। संघ का ध्येय है-स्वधर्म पालन जो सनातन धर्म है। संघ हमें समझाता है, ज्ञान करवाता है कि परमपिता परमेश्वर ने हमें क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है तो हमारा परम कार्य है क्षात्रधर्म का पालन करना जो हमारा स्वधर्म है। हमें हमारे स्वधर्म पालन के लिए संगठित होना है। संगठित होकर शक्ति जुटाना है। संगठित होना है तो संगठन का मार्ग भी एक ही होना चाहिये। एक ही मार्ग पर चलने के लिये हम सभी के विचार भी एक होना चाहिए। विचार एक तभी हो सकेंगे जब सबके संस्कार एक हों। एक जैसे संस्कार तभी होंगे जब कार्यप्रणाली सामुहिक संस्कार निर्माण की हो। एक ही ध्येय, एक ही मार्ग, एक जैसे ही संस्कार लेकिन हम सब एक ही मार्ग पर तभी चल पाएँगे जब हमारा नेता, मार्गदर्शक एक हो। यदि अनेक नेता हों तो किसकी आज्ञा मानें? इसीलिए संगठन को चिरस्थायी बनाने के लिये एक ही गुणात्मक नेतृत्व होना चाहिए। ये सब परिस्थितियाँ समान हैं तो एकता के प्रतीक रूप में ध्वज भी एक होना नितान्त जरूरी है। तब जाकर संघेशक्ति कलौयुगे का सूत्र सार्थक होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी आधार पर शाखाओं, शिविरों, उत्सवों, खेलों, गीतों, चर्चाओं, प्रवचनों के माध्यम से सामुहिक संस्कार निर्माण द्वारा स्थायी संगठन कार्य कर रहा है।

दोषपूर्ण समाज व्यवस्था- क्षत्रिय समाज, कई शाखाओं, उपशाखाओं में बंटा हुआ है। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, अग्निवंशी तो हैं ही, इनकी भी अनेक शाखाएँ, उपशाखाएँ हैं। ये सभी अपने-अपने वंश, शाखा को दूसरों से ऊँचा और महान बताकर अपने अहं का पोषण करते हैं। फलस्वरूप आपस में वैमनस्य फैलता है और संगठन में या किसी अच्छे कार्य में बाधा डालते हैं। कुसंप का विष फैलता है। एक जुट नहीं रह पाते। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक अपना परिचय देते अपनी खांप नहीं बताते हैं, अपने नाम के पीछे अपने गाँव का नाम ही बोलते हैं या लिखते हैं। जैसे श्री नारायणसिंह जी रेड़ा 'रेड़ा' श्री नारायणसिंह जी के गाँव का नाम है, उनका सरनेम नहीं, खाँप नहीं है। संघ खांप में मानता है पर कब? जब लड़के या लड़की का सम्बन्ध करना हो। उस समय यह जानकारी लेना आवश्यक है क्योंकि हमारे यहाँ सजातीय, सगौत्र में रिश्ता नहीं होता। एक ही वंश की लड़की और लड़के की शादी करवाना वैज्ञानिक दृष्टि से भी उचित नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक इतने शिविरों में साथ-साथ रहते हुए शायद ही एक दूसरे की खाँप जानते हों, इसलिए कभी खांप की ऊँच नीच का भाव ही पैदा नहीं होता।

अंग्रेजों ने हमारे समाज को विभाजित कर दिया था। राजाओं और जागीरदारों का अलग वर्ग बना दिया। राजा और जागीरदार के अतिरिक्त जो राजपूत रहे वे छुटभाई कहलाए। इसका दुष्परिणाम यह आया कि छुटभाई राजा-जागीरदार के साथ एक जाजम पर नहीं बैठ सकते थे। परिणामत: एक का अहं बढ गया, दूसरे का मन दुखी हुआ। अत: सभी वर्ग एक मंच पर नहीं आ सके। आज भी यह परिस्थिति बनी हुई है कि उच्च पदाधिकारी और धनवान लोग कुछ-कुछ इस कुविचार धारा को अपना रहे हैं।

क्षत्रिय युवक संघ में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। संघ में आनेवाला राजा हो, जागीरदार हो या आम राजपूत हो, सबका समानता के भाव से आदर-सत्कार है। हाँ, व्यक्ति की आयु और स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर किसी को कुछ सुविधा दी जाती है पर हैं सब समान। संघ में संघप्रमुख हो, शिक्षण प्रमुख हो, शिविर प्रमुख हो, पथक शिक्षक हो, घटनायक हो, पुराना स्वयंसेवक हो या नया स्वयंसेवक हो सभी समान रूप से, समान आसन पर एक ही जाजम पर बैठते हैं और एक ही समान भोजन

पाते हैं। यही कारण है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक और सहयोगी (पदाधिकारी) में गुरुता और लघुता का भाव पनपता ही नहीं है और गीता के उपदेश के अनुसार सभी परिस्थितियों में सम भाव से सम द्रष्टा होकर रहते हैं।

हमारे राष्ट्र में शास्त्रीय रूप से, सम्यक रूप से वैज्ञानिक आधार पर जो वर्ण व्यवस्था थी, उसमें कुछ स्वार्थी और अहंकारी तथा ज्ञान-पाखण्डी लोगों के कारण ऊँच-नीच का, छुआछूत का दूषण व्यापक रूप से घुस गया था। इसी के कारण सामाजिक व्यवस्था टूट गई थी। संघ उस दूषण को दूर करना चाहता है, दूर कर रहा है। हर मानव को परमेश्वर की कृति मानता है। 'संघ दीप से जलकर हम सब दीपलड़ी बन जावें। भाव कर्म को एक बनाकर व्यक्तिवाद बिसरावें।' हम ऐसा संघ बना रहे हैं।

अनादर्श स्वामी भक्ति- स्वामिभक्ति एक आदर्श गुण है, लेकिन हम हमारे इतिहास का अवलोकन करें तो इस स्वामीभक्ति का अनुचित जगह पर भी प्रयोग हुआ है। वह आदर्श स्वामी भक्ति नहीं कही जा सकती। वीर दुर्गादास एक आदर्श स्वामी भक्त थे। महाराजा जसवंतसिंह जी ने काबुल में अपने अन्तिम क्षणों में दुर्गादास जी से कहा था कि मारवाड़ और मेरे पुत्र की जिम्मेवारी तुम्हें सौंपता हूँ। मारवाड़ राज्य और उसके भावी राजा की भोळावण तुम्हें देता हूँ। मुगल बादशाह औरंगजेब बाल राजा अजीतसिंह को मुसलमान बनाकर मारवाड़-जोधपुर का राज्य खालसा करना चाहता था। दुर्गादास ने तीस वर्ष तक जंगलों में, मगरों में रहकर औरंगजेब के साथ संघर्ष किया। विश्राम का नाम तक नहीं था, यहाँ तक कि घोड़े की पीठ पर बैठे भाले की नौक से चिता की आग में रोटी सेक कर खाई, लेकिन जोधपुर के सिंहासन पर अजीतसिंह को बिठाकर रहे। औरंगजेब ने दुर्गादास को लालच भी देने का बहुत प्रयास किया लेकिन दुर्गादास ने ठुकरा दिया। अपने स्वामी के पुत्र को उसका अधिकार दिलवाकर आदर्श स्वामी भक्ति प्रकट की।

हल्दीघाटी के युद्ध में झाला मानसिंह ने महाराणा प्रताप को मुगलों से घिरा हुआ देखा, प्रताप के लिए खतरा था। झाला मान ने अपना घोड़ा प्रताप के पास लिया और कहा कि मेवाड़ को आपकी आवश्यकता है। आप रहेंगे तो फिर से सेना एकत्रित कर मेवाड़ को स्वतंत्र कर पा सकेंगे इसलिए आप घेरे से निकल जाएँ। झाला ने राणा का मुकुट और छत्र लिया और प्रताप को घेरे से निकाला। मुगल सेना ने झाला मान को ही महाराणा समझकर घेर लिया और चारों ओर से तलवार, भालों से आक्रमण करते रहे। झाला मान वीरगति को प्राप्त हुए लेकिन अपने महाराणा की जान बचाई। यह है आदर्श स्वामी भक्ति।

राणा सांगा और बाबर के बीच खानवा के मैदान में हुए युद्ध में सरहदी बाबर के साथ मिल गए और राणा के विरुद्ध लड़े। उनके साथ उनकी सेना के तीस हजार सैनिक भी उनके साथ विरोधी की ओर से लड़े। उन तीस हजार द्वारा अपने राजा के प्रति दिखाई गई स्वामी भक्ति उचित थी? इसके कारण देश गुलाम हो गया, यह अनादर्श स्वामी भक्ति है। एक मुस्लिम इतिहास लेखिका के अनुसार एक बार अकबर शराब पीकर बोला राजपूत के सिर कटने के बाद भी उनकी धड़ लड़ती रहती है। हम भी ऐसा कर सकते हैं। दीवार में एक भाला गाडकर तथा तलवार हाथ में लेकर शराब के नशे में उस भाले की तरफ बढते हुए तलवार घुमाता हुआ अपना सिर काटने को उद्यत हुआ। राजा मानसिंह ने उसे पकड़ कर बचाया। यह कैसी स्वामी भक्ति? हमारे समाज, हमारे राष्ट्र, हमारी संस्कृति, हमारे धर्म, हमारी स्वाधीनता का दुश्मन स्वयं मर रहा था, उसको बचाना कैसे उचित कहा जा सकता है। ऐसे कई उदाहरण मिल सकते हैं जो अनादर्श स्वामी भक्ति ही है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक नेता में विश्वास रखता है लेकिन व्यक्तिवाद मान्य नहीं है। संघ गुणात्मक एवं क्षमतात्मक नेतृत्व में विश्वास करती है। नेतृत्व से पहले संघ स्वयंसेवक का निर्माण कर जिम्मेदार बनाता है। कोई व्यक्ति पूर्ण नहीं होता, पूर्ण तो केवल परमेश्वर ही है पर संघ का मार्ग अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाने का मार्ग है। संघ व्यक्ति में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण करता है और

उसी के अनुसार व्यक्ति अपना आचरण करता है, उसी को अधिकारी साधक कहा जाता है। संघ के संस्कार शिस्त (discipline-obey) नहीं, बल्कि अनुशासन अर्थात् पहले समझो फिर करो। यदि कोई शंका-संदेह हो तो पहले उसको समझकर फिर उसका पालन करो, बिना समझे देखा-देखी से नहीं। शिविर में स्वयंसेवक, घटनायक का, पथक शिक्षक का आदेश अनुशासन से पालन करता है लेकिन यदि उसे संघप्रमुख का आदेश मिले तो उसे उस आदेश को मानना होता है। यदि सरहदी के साथ के राजपूत सैनिक सरहदी के ऊपर राणा सांगा का आदेश मानते तो हार का मुँह देखना न पड़ता। क्षत्रिय युवक संघ पहले अधिकारी साधक, अधिकारी स्वयंसेवक का निर्माण करता है और उन्हीं में से योग्य समर्पित नेता को चुनता है। यहाँ आधार बहुमत नहीं है-गुणात्मकता, क्षमतात्मकता और समर्पण ही आधार है। और तब भाव बनते हैं-'अपने नेता की आज्ञा पर मरना ध्येय हमारा हो, ऐसा संघ हमारा हो।'

भूतकाल में हमने जो भूलें की उन पर गंभीरता से विचार नहीं किया अत: प्रश्न खोये रहे और उत्तर ढूंढे नहीं गये। ऐतिहासिक अन्तरावलोकन कर जो भूलें ढूंढी गई संघ अब उनका उपाय भी कर रहा है। खोये प्रश्नों का अब उत्तर दिया जा रहा है। इन्हीं उपायों के माध्यम से बिछुड़े हुओं को बुलाकर मेले लगा रहा है।

पृष्ठ 12 का शेष

छोड़ो चिन्ता-दुश्चिन्ता को

छात्र क्या विवेक, अनुशासन, आत्मसंयम और शिष्टाचार की भावना रखकर देश के अच्छे नागरिक बन सकेंगे? ऐसी शिक्षा अनुशासन और संयम की लगाम से रहित एक जंगली घोड़ा बन सकती है, जो औचित्य-ज्ञान दे पाने में असमर्थ और नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा से रहित होगी। वह अपनी इच्छानुसार स्वच्छन्द गति से जहाँ कहीं भी विचरण कर सकती है। इसके फलस्वरूप वह आत्मघाती और सामाजिक रूप से हानिकारक कार्यों को बढ़ावा दे सकती है। उपर्युक्त कथन के प्रमाण के रूप में समाज में अनुशासनहीनता, चंचलता और बड़े पैमाने पर दुराचरण व्याप्त है। समाज तथा प्रशासन में उच्च-पदस्थ लोगों को अपने नैतिक आचरण के द्वारा जनता के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। गीता कहती है कि बड़े लोगों की देखा-देखी ही सामान्य जन भी आचरण करते हैं। नेता को दाता होना चाहिए। समाज के हितार्थ उसे अपने हित की आहुति देने में तत्पर रहना चाहिए। पर हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे राजनैतिक नेतागण लोगों को उचित पथ पर अग्रसर कराने और उनके नैतिक स्तर को उन्नत करने वाले लोगों में नहीं है। आज नेता बनने के इच्छुक लोग राष्ट्र के इतिहास, अर्थशास्त्र या राजनीति विज्ञान के बारे में कुछ भी जानने की परवाह नहीं करते। वे सोचते हैं कि उन्हें किसी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं। उन्हें स्वार्थपरायणता ही सब कुछ प्रतीत होती है। मतदाताओं को लुब्ध करने वाली चालबाजियों का ज्ञान और उनके प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित हो जाना ही उन्हें असली बात प्रतीत होती है। मतदाताओं में से 70% तो अनपढ़ हैं, जो पूरे देश के हित या भविष्य का विचार किए बिना केवल अपनी तात्कालिक सुविधा की बात सोचते हैं। नेतागण इसे भलीभाँति जानते हैं और अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने हेतु इस स्थिति का लाभ उठाने में ही रुचि रखते हैं। कुछ वर्ष पूर्व भारत के राष्ट्रपति ने कहा था, 'राजनेता आज नैतिक सिद्धान्तों का जितना अनादर कर रहे हैं, उतना इसके पहले कभी नहीं हुआ था। जनजीवन के लिए हानिकारक इस आचरण को सुधारना जरूरी है।' आज के संकट की आप कल्पना कर सकते हैं। आज सर्वत्र अनैतिकता, भ्रष्टाचार तथा कालाबाजार का साम्राज्य फैला है। हत्या तथा डकैती जैसे अपराधों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने एक बार कहा था कि स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार और उनका शोषण असाध्य नैतिक पतन का लक्षण है। तब दिल्ली शहर में केवल एक हजार पुलिस-बल थे। आज यह संख्या बढ़कर तीन लाख हो गयी है, पर एक स्त्री दिन में भी दिल्ली की सड़कों पर अकेले जाने में डरती है। **(क्रमश:)**

पृथ्वीराज चौहान

– विरेन्द्रसिंह मांडण (किनसरिया)

संपर्क दायरा, व्यक्तित्व और आरम्भिक जीवन (भाग–1)

पूर्वजों के बाद अब हम पृथ्वीराज चौहान तृतीय के संपर्क में पाए गए मुख्य व्यक्तियों का परिचय लेंगे।

पिता– सोमेश्वर चौहान जो कि 1169 से 1177 ई. तक अजमेर नरेश रहे। इनके किसी मुस्लिम शक्ति से संघर्ष की कोई जानकारी तो नहीं मिलती। पर इनके शासनकाल में खुरासान की राजनीति में भूचाल अवश्य आ गया। गजनी नगर और गजनवियों के राज्य का अधिकांश भाग उनके हाथ से निकल गया जो कि कुछ वर्षों बाद गोरी के नाम चढ़ गया। खुद के ही गढ़ से खदेड़े गए गजनवी अब लाहौर को राजधानी बना पंजाब में शासन करने लगे थे।

अपने सोलंकी ननिहाल में बड़े होते सोमेश्वर ने सोलंकी नरेश व नाना सिद्धराज जयसिंह के प्रस्थान पर अपने मामा कुमारपाल के अधीन कार्य किया। सोमेश्वर अजमेर सिंहासन पर आने के बाद अजयपाल सोलंकी के भी समकालीन रहे। सोमेश्वर पर एक रासो जनित भ्रान्ति है कि उनकी मृत्यु भीमदेव सोलंकी से युद्ध में हुई। इसकी कलई आगे खुल जाएगी।

सोमेश्वर को उनकी संगीत विद्या के लिए भी कला जगत में जाना गया।

माता– त्रिपुरी अथवा चेदि के चंद्रवंशी कलचुरि कुल की राजकुमारी कर्पूरीदेवी। यह स्थान अब दक्षिणी मध्यप्रदेश में तेवर नाम से जाना जाता है। कर्पूरदेवी के पिता का नाम अलग-अलग स्थानों पर अचलराज व नरसिंहदेव बताया गया है। रासो और उसके बाद आए बलभद्र विलास में यह मिथक पाया जाता है कि दिल्ली नरेश अनंगपाल तोमर की कमला यानी कीर्तिमालिनी नामक पुत्री से सोमेश्वर का विवाह हुआ और उससे पृथ्वीराज का जन्म हुआ।

भाई– पृथ्वीराजविजय, हम्मीर महाकाव्य, पुरातन प्रबंध संग्रह, फरिश्ता और अजमेर से प्राप्त 1194 ई. का एक शिलालेख, सभी एक सुर में पृथ्वीराज का एक ही भाई बताते हैं जिनका नाम हरिराज चौहान था। इन्हें कुछ जैन धर्म ग्रंथों में यशोराज भी कहा गया है। पर रासो फिर अपनी अलग खिचड़ी पकाते हुए पृथ्वीराज का कोई सहोदर ही नहीं बताता है।

पुत्र– हम्मीर महाकाव्य, तज-उल-मासिर आदि ग्रंथों से पता चलता है कि पृथ्वीराज चौहान के पुत्र गोविन्दराज चौहान थे। इनसे बाद में लिखते हुए फरिश्ता ने अशुद्ध नाम 'गोला' लिखा है। रासो का मत है कि पृथ्वीराज के पुत्र का नाम रैणसी था, इसका समर्थन अन्य कोई स्रोत, ग्रंथ नहीं करता। पर इतनी जानकारी देखने के बाद यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सपादलक्ष-नृपति पृथ्वीराज का केवल एक ही पुत्र था। यह उनका छोटा आयु भोग और उसमें मची भयंकर व्यस्तता देखते हुए भी सटीक लगता है।

बहन– रासो के अनुसार पृथ्वीराज की बहन का नाम पृथा था व उनका विवाह मेवाड़ के समरसिंह से हुआ। रासो से पहले का एक भी स्रोत सोमेश्वर की किसी पुत्री का अस्तित्व नहीं बताता। समकालीन ग्रन्थ पृथ्वीराजविजय में पृथ्वीराज के भाई हरिराज के जन्म की पर्याप्त जानकारी मिलती है। ग्रन्थ आगे लगभग 1178 ई. तक की घटनाओं को समेटे है, जब पृथ्वीराज किशोरावस्था में पहुँच चुके थे। ऐसे में उनकी कोई बहन भी जन्मी थी तो उसका पृथ्वीराजविजय व अन्य किसी निकटकालीन ग्रन्थ में तनिक भी उल्लेख ना हो, यह बात स्वीकार्य नहीं। विशेषकर जब सोमेश्वर का ज्ञात इतिहास में केवल एक विवाह मिलता है।

गोरी– मुहम्मद गोरी अथवा शहाबुद्दीन गोरी, उपाधि/उपनाम-'मुइजद्दीन'। जन्म 1149-1150 ई. में, उद्गम अफगानिस्तान के गोर प्रान्त से है। ये 12वीं सदी ईस्वी के अन्तिम पद में उत्तर भारत पर निरंतर आक्रमण करने वाली मुस्लिम लश्करों का सेनानायक था।

जयचंद्र गहड़वाल– महाकाल की नगरी काशी से राज करने वाले ये गहड़वाल राजा पृथ्वीराज के समकालीन थे। पर इन्हें कन्नौज के राजा के रूप में अधिक जाना जाता है। रासो की मानें तो ये विख्यात संयोगिता के पिता थे।

संयुक्ता/संयोगिता– इनका पृथ्वीराज चौहान से प्रेम विवाह हुआ बताया जाता है, जिस विषय में आगे विस्तार करेंगे।

कदम्बावास/कैमास– चौहान राज्य के प्रभावशाली दाहिम वंशीय प्रधान मंत्री। इनकी भूमिका का महत्त्व पृथ्वीराजविजय, पृथ्वीराज रासो और खरतरगच्छपट्टावली जैसे ग्रंथों ने भी माना है।

गोविंदराज/चावंडराय/चाहड़पाल– 1180 के दशक से तराइन के युद्धों तक पृथ्वीराज के समकालीन रहे तोमर राजा।

भुवनैकमल्ल– कर्पूरीदेवी के कलचुरी वंशीय परिजन और पृथ्वीराज के अनुभवी सेनापति।

पृथ्वीराज का जन्म उनके पिता के ननिहाल यानी चौलुक्य राजवंश की राजधानी अन्हिलवाड़ (गुजरात) में हुआ। जन्मकाल हम पूर्व में निर्धारित कर चुके हैं (1162-63 ई.)। पृथ्वीराज 1169 ई. में सोमेश्वर के सपरिवार अजमेर प्रस्थान तक चौलुक्य छत्रछाया में ही रहे।

बाल्यकाल में पृथ्वीराज को तत्कालीन मानकों के अनुसार छः भाषाएँ सिखाई गयी। इसके अतिरिक्त उन्हें सैन्य, औषध, मीमांसा, धर्म, पौराणिक, इतिहास, गणित, संगीत एवं चित्र कला का प्रशिक्षण दिया गया। हमारे महानायक नित्य शारीरिक व्यायाम के बाद अश्वरोहण और आखेट आदि किया करते थे। पृथ्वीराज की वाणी गंभीर व भारी थी, केश घुंघराले थे। बाहों की लम्बाई धुनर्विद्या में प्रवीणता का एक कारक है। विशाल नेत्र, चौड़ा वक्ष, लम्बी बाहें (आजानुबाहु) लिए पृथ्वीराज आगे चलकर अपनी धनुर्विद्या के लिए उत्तर भारत के सबसे प्रवीण क्षत्रिय माने गए। इसकी पुष्टि अनेकों ग्रंथ करते हैं। पृथ्वीराज गज नियंत्रण में कुशल तो थे ही। गज की भाँति उनकी चाल भी धीमी, डोलती सी थी।[1]

जैने ग्रंथों के वर्णन से इसे जोड़ा जाए तो पृथ्वीराज शारीरिक रूप से बहुत सक्रिय, प्रतिस्पर्धा, जल्दी क्रोधित होने वाले, सामाजिक रूप से जागरूक और एक कला-केलि-प्रिय व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो रहे थे।

पृथ्वीराज के बाल्यकाल की घटनाओं में रासो का एक प्रसंग है कि दिल्ली के राजा अनंगपाल तोमर बिना संतान ही संन्यास आयु के हो चले थे। सो उन्होंने कदम्बावास को पत्र लिखा कि अपने नाती पृथ्वीराज को गोद लेकर राज्यभार उसे सौंप सांसारिकता से निवृत होना चाहते हैं। जिसके बाद पृथ्वीराज को गाजे-बाजे से दिल्ली जाकर वहाँ का राज्य ग्रहण करते दिखाती है।[2]

पर रासो के इस हवाई किले में कील ठोकता तोमर इतिहास कुछ और ही कह रहा है। ढीली वंशावली, लौह स्तम्भ शिलालेख और पासनाह चरिउ अर्थात् पार्श्वनाथ चरित की जानकारी जोड़ें तो यह सिद्ध हो जाता है कि अनंगपाल तोमर तो पृथ्वीराज के जन्म से 82 वर्ष पूर्व 11वीं सदी ईस्वी में परलोक सिधार गए। 1132 ई. के पासनाह चरिउ की पुष्पिका के आधार पर श्री दशरथ शर्मा द्वारा कहा गया कि उस समय एक और अनंगपाल तोमर ने दिल्ली पर शासन किया था। जिसका भरपूर खंडन द्विवेदी जी उसी ग्रन्थ के बल पर पहले ही कर चुके हैं।[3] चरिउ का कथन केवल 11वीं सदी के अनंगपाल पर लागू होता है। पृथ्वीराज चौहान जिन तोमर राजाओं से समकालीन थे वो हैं- मदनपाल तोमर (1151-66 ई.), पृथ्वीपाल तोमर (1167-89 ई.), गोविंदराज/चाहड़पाल तोमर (1189-92 ई.)।[4]

जब 12वीं सदी के तोमरों की नियमित चलती वंशावली किसी वयोवृद्ध निःसंतान राजा का वर्णन नहीं करती तो ये पृथ्वीराज को राज्य देकर संन्यास लेते अनंगपाल कहाँ से पधारे? यह बताने का उत्तरदायित्व रासो के कल्पनाशील लेखकों का है।

किशोरावस्था में पहुँचते ही पृथ्वीराज ने सैन्य अभियानों में भाग लेना शुरू कर दिया था। जयानक जी के अनुसार तो राजा के उभरते पौरुष से अन्य राज्यों की राजकुमारियों से लेकर विवाहिताएँ तक विचलित और आकृष्ट थीं। खैर, जयानक और कदम्बवास के निर्देशन में शुरू हुई इस सैन्य-राजनैतिक प्रक्रिया से अजमेर का कोषगार तो अवश्य भरने लगा।[5]

1. पृथ्वीराजविजय सर्ग-9, 2. पृथ्वीराज रासो लघु संस्करण, द्वितीय खंड, 3. दिल्ली के तोमर, पृ.-73, 4. तोमरों की ढीली वंशावली; खरतरगच्छ पट्टावली पृ. 21-23, 5. अलंकार महोदधि, 1232 ई.; ढीली वंशावली।

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

दिल्ली दरबार से महाराणा को रोकना :

(महाराणा फतहसिंह–बारहठ केशरीसिंह–राव गोपालसिंह)

सम्राट एडवर्ड के राज्यारोहण के उपलक्ष में भारत के वायसराय लार्ड कर्जन ने सन् 1903 के जनवरी माह में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन किया था जिसमें उपस्थित होने के लिए भारतवर्ष के समस्त महाराजाओं, राजाओं और नवाबों को आमन्त्रित किया गया था।

मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह ने उक्त दिल्ली दरबार के आमंत्रण को यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि उनके प्रतापी पूर्वजों ने दिल्ली दरबार में कभी भी उपस्थित न होने की प्रतिज्ञा की थी, जिसका उनके खानदान में यथावत पालन होता आ रहा है। इस पर लार्ड कर्जन स्वयं उदयपुर गया और महाराणा को हर पहलू से समझा–बुझाकर दरबार में शामिल होने को राजी कर लिया। महाराणा दिल्ली के लिए प्रस्थान करने वाले हैं। यह समाचार जानकर भारत की स्वाभिमानी हिन्दू जनता ही नहीं बल्कि विवेकशील मुसलमान भी उस राष्ट्रीय गौरव पर छद्म रूप से किये गये प्रहार से विक्षुब्ध हो उठे थे। उस काल तक भारत के लोग मेवाड़ के महाराणा को राष्ट्रीय गौरव के रूप में मानते–जानते थे।

वे ''हिन्दुवां–सूरज'' के सर्वोच्च मान्य 'विरुद' से स्मरण किये जाते थे। ऐसे महाराणा का अपने प्रतापी पूर्वजों द्वारा ली गई प्रतिज्ञा से विमुख होना, उस समय सारे भारत के स्वाभिमान का अपमान माना गया।

जयपुर के मलसीसर हाउस में ठा. भूरसिंह शेखावत के यहाँ लिए गये देशभक्ति पूर्ण साहसिक निर्णय के अनुसार उस काल के उदीयमान क्रान्तिकारी युवक बारहठ केशरीसिंह सौदा ने अपने कवि धर्म का निर्वाह करते हुए महाराणा के सुप्त गौरव को जगाने हेतु 13 सोरठों में मर्मस्पर्शी रचना सृजित करके राव गोपालसिंह को महाराणा तक पहुँचाने को सौंप दी।

ठीक उसी समय जब महाराणा की स्पेशल ट्रेन दिल्ली की तरफ धड़धड़ाती जा रही थी–नसीराबाद रेल्वे स्टेशन से पूर्व बारहठ केसरीसिंह द्वारा रचित ''चेतावणी र्‌या चुँटक्या'' महाराणा को प्रस्तुत किए गये। सोरठे क्या थे, महाराणा के सुप्त गौरव पर व्यंग्यात्मक चाबुक प्रहार था। प्रतापी राणा प्रताप का वंशज फतहसिंह सोरठे सुनकर रोमांचित हो उठा। कर्तव्यबोध ने उसे झकझोर दिया। कवि ने उसे कुल मर्यादा का बोध कराते हुए कहा था–

पग पग भम्या पहाड़, धरा छाड़ि राख्यो धरम।
महाराणा'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिन्द रै।।1।।
घण घलियाँ घमसाण, राण सदा रहिया निडर।
पेखन्तां फुरमाण, हलचल किम फतमल हुवै।।2।।
नरयंद सह नजराण, झुक करसी सरसी जिका।
पखरैलो किम पाण, पाँण छतां थारो फता।।3।।
देखैला हिन्दवाण, निज सूरज दिसि नेहसूं।
पर तारा परवांण, निरख निसासा नाँखसी।।4।।
देखर अंजसदीह, मुलकैलो मनही मनां।
दम्भी गढ दिल्लीह, सीस नमन्ता सीसवद।।5।।

हे महाराणा फतहसिंह! तेरे पूर्वजों ने धरती और राज्य का मोह त्याग कर भी स्वधर्म की रक्षा की थी। उन्होंने पहाड़–पहाड़ घूमना श्रेयस्कर समझा परन्तु आन–बान एवं मर्यादा को नहीं छोड़ा। यही कारण है कि भारतीयों के हृदय में आज भी मेवाड़ और महाराणा का नाम ऐसा रच बस गया है, जिसे भूला नहीं जा सकता, तूं इसे सोच समझ ।।1।।

बड़े–बड़े घमासाण युद्धों के अवसर उपस्थित होने पर भी, तेरे पूर्वजों ने निडर होकर युद्ध लड़े हैं। उनके

वंशज हे फतहसिंह! केवल एक फरमान (शाही आज्ञा पत्र) देखने मात्र से ही तूं कैसे विचलित हो उठा, आश्चर्य है ।।2।।

दिल्ली के इस दरबार में अन्य राजागण, नतमस्तक होकर नजर पेश करेंगे। यह कार्य उन्हें भले ही शोभा दे जाए परन्तु हे फतहसिंह! तेरे हाथ में तो सम्राटों को झुकाने वाले प्रतापी पूर्वजों की तलवार है। उस तलवार से शोभित तेरा हाथ नजर पेश करने के लिए कैसे फैलाया जाएगा, तू इसे सोच ।।3।।

अतीत काल से देशवासियों द्वारा प्रदत्त-'हिन्दवां-सूरज' के सर्वोच्च विरुद के पुकारे जाने वाले महाराणा! अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त भारत के सितारे (Star of India) की तुच्छ पदवी तुझे कैसे शोभा देगी। राष्ट्रीय गौरव के इस विघटन को देखकर देशवासी मन ही मन अति दु:खी होंगे। तेरे गौरव की गिरावट के इस क्षण को तूं ही समझ ।।4।।

हे शीशोदिया! जब तूं दिल्ली के दुर्ग-द्वार में शीश झुकाकर प्रवेश करेगा तो दिल्ली का वह दम्भी और घमण्डी दुर्ग, मन ही मन प्रफुल्लित हो उठेगा ।।5।।

यह देखकर कि दिल्लीश्वर के सामने कभी भी मस्तक न झुकाने वाले प्रताप का वंशज आज नतमस्तक होकर उसी दुर्ग में प्रवेश कर रहा है।

चेतावनी के सोरठे सुनकर महाराणा विचलित हो उठे, सोच में पड़ गए। फिर उन्होंने कहा कि वे सोरठे यदि उन्हें उदयपुर में मिल जाते तो वे दिल्ली के लिए प्रस्थान ही नहीं करते। परन्तु जब रवाना हो चुके हैं तो दिल्ली पहुँचकर ही इस पर विचार करेंगे। दिल्ली पहुँचकर भी महाराणा दिल्ली दरबार में उपस्थित नहीं हुए। अन्य सूत्रों से ज्ञात हुआ कि अलवर नरेश जयसिंह और जोधपुर के सर प्रतापसिंह ने भी महाराणा को दिल्ली दरबार में उपस्थित न होने की ही सलाह दी थी।

वायसराय लार्ड कर्जन भव्य दरबार में महाराणा की खाली कुर्सी को देखकर मन ही मन अपनी कूटनीतिक पराजय पर कुंठित हो रहा था। उधर महाराणा की स्पेशल ट्रेन वापस वीरभूमि मेवाड़ की तरफ रवाना हो चुकी थी।

दिल्ली जाते समय महाराणा फतहसिंह को 'सरेरी' रेल्वे स्टेशन पर चेतावनी के चूंटके पहुँचाने एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्यों में सहायता देने में खरवा के राव गोपालसिंह की भूमिका प्रमुख रही थी। महाराणा के दिल्ली से वापस लौटते समय नसीराबाद रेल्वे स्टेशन पर उपस्थित होकर राव गोपालसिंह ने राष्ट्रीय गौरव के रक्षक महाराणा को धन्यवाद निवेदन करते हुए निम्न दो सोरठे प्रस्तुत किए -

होता हिन्दू हताश, नमतो जे राणा नृपत।
सबल फता साबास, आरज लज राखी अजां।।
करजन कूटिल किरात, ससक नृपत ग्रहिया सकल।
हुओ न थूं इक हाथ, सिंह रूप फतमल सबल।।

हे महाराणा! इस अवसर पर यदि तुम सर्वोच्च सत्ता के सन्मुख झुक जाते, नत-मस्तक होकर दिल्ली दरबार में चले जाते तो समस्त हिन्दू जाति तुम्हारे इस कार्य से हतोत्साहित हो जाती। परन्तु तुम्हें शाबास है, धन्यवाद है कि तुमने आर्यों के, भारत के, श्रेष्ठ जनों के गौरव की रक्षा कर ली।

लार्ड कर्जन रूपी इस निषाद ने सशंक के समान अन्य राजाओं को बन्धन में जकड़ दिया है, परन्तु हे फतहसिंह! गर्वोन्नत सिंह की भाँति तू उस व्याघ्र के बन्धन में आबद्ध नहीं किया जा सका।

संस्कृत एवं अंग्रेजी- राव गोपालसिंह गर्वीले स्वभाव के स्वाभिमानी वीर योद्धा थे। आर्य समाज के सुधारवादी एवं देशभक्ति पूर्ण विचारों का उन पर गहरा प्रभाव था। खरवे ठिकाने का शासन सूत्र हाथ में लेते ही उन्हें अजमेर के अंग्रेज अधिकारियों के सीधे सम्पर्क में आना पड़ा। अंग्रेजों के अहम भाव का तब उन्हें पग-पग पर आभास होने लगा। तभी से वे मन ही मन अंग्रेज विरोधी होते गए और जब भी कभी ऐसे अवसर आए, वे उनका विरोध करने में अगुआ बने रहे।

मेयो कॉलेज की शिक्षा नीति और पद्धति के भी वे आलोचक थे। वहाँ पर शिक्षा पाने वाले राजकुमारों और सामन्त पुत्रों को उनके कुलाचार एवं सभ्यता संस्कृति से अनभिज्ञ रखते हुए पाश्चात्य संस्कृति और आचार-विचारों

के रंग में रंगने का दुष्प्रयत्न किया जा रहा था। उनकी मान्यता थी कि संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित ज्ञान-गर्भित सिद्धान्तों एवं सद्‌विचारों से राज-पुत्रों को अनभिज्ञ बनाए रखकर केवल अंग्रेजी में ही शिक्षा दिलाना उनके भावी जीवन के लिए आत्मघाती कार्य होगा। अत: उन बालकों को प्रारम्भ में कुछ काल तक घर पर ही संस्कृत भाषा का ज्ञान कराना आवश्यक है।

इस संदर्भ में घटित एक घटना का उल्लेख करना समीचीन होगा- सन् 1905 में जून माह में अजमेर के अंग्रेज कमिश्नर मिस्टर विनचेन ने राव गोपालसिंह को पत्र लिखकर उनके पुत्र गणपतसिंह को शिक्षा हेतु मेयो कॉलेज में प्रवेश दिलाने का आग्रह किया था। उक्त पत्र के उत्तर में राव साहब ने विनचेन को लिखा था-''आपका पत्र कुं. गणपतसिंह को पढ़ाने हेतु मेयो कॉलेज भेजने का मिला। उत्तर में लेख है कि हम उसे प्रथम संस्कृत भाषा का ज्ञान कराना जरूरी समझते हैं, ताकि वह हिन्दु धर्म और भारतीय सभ्यता-संस्कृति को समझने योग्य बन सके। हमने उक्त कार्य हेतु उसे घर पर पढ़ाने को एक योग्य शिक्षक रख लिया है। हम अंग्रेजी को पठनार्थ द्वितीय स्थान देते हैं।''

अंग्रेजी में लिखित उक्त पत्र की नकल खरवा रेकार्ड से उद्धृत की जा रही है-"Your letter regarding the education of Kanwar Ganpat Singh is at hand. To it my reply is that we want to teach him Sanskrit First, so that he may understand the principles of Hindu Religion and culture. We have already appointed good scholer to teach him at home. We give second place to English....)"

(क्रमश:)

पृष्ठ 6 का शेष

चलता रहे मेरा संघ

क्षत्रिय युवक संघ में समझ में आएगा। यहाँ बौद्धिक में बताये जाएँगे। कोई बात समझ में न आए तो चर्चाओं आदि में पूछें। कई कार्यक्रमों में बोलने का अवसर मिलता है, उसमें सभी प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं। यम से समाधि तक का अभ्यास होता है।

रात को सोते समय एक अभ्यास कर लें। यहाँ करेंगे तो वहाँ भी कर लेंगे। बिस्तर पर सोने वाले हैं तो अब कोई बात नहीं करेंगे। बिस्तर पर बैठकर चिंतन करें कि मेरा लक्ष्य क्या है? मेरा प्रभु कौन है? वहाँ तक मैं कैसे पहुँच सकता हूँ? ज्यों ही यह ध्यान में आए, उस क्षण सो जाएँ। नींद बहुत अच्छी आएगी। यहाँ आपको सोने का समय कम ही मिलता है। इन सब चीजों का ध्यान रखेंगे तो हमारे जीवन में शान्ति आएगी। कैसी शान्ति, जो एक बार आ जाए तो बनी रहे। ऐसे बहुत स्वयंसेवक हैं क्षत्रिय युवक संघ में जिन्होंने इस शान्ति को, अखंड शान्ति को प्राप्त किया है। उनके जीवन को देखकर हम अनुमान लगा सकते हैं कि संघ निश्चित रूप से संपूर्ण योग मार्ग है। जो कार्यक्रम करवाये जाएँ वो तो हमको करने ही हैं। पर छोटी-छोटी जो गलतियाँ हैं वे बाँध में सुराख हैं, इससे बांध टूट जाता है। नियम विरुद्ध जाकर या भूल से, असावधानी से जो नियम भंग होते हैं वे न हों यह जागरूकता बनायें। हमारा घटनायक सबसे निकटस्थ मार्गदर्शक है। उसमें उपघटनायक सहयोग करता है। जो नहीं कर रहे, उनको करना चाहिए। अन्य सहयोगी भी हैं और अन्त में संघप्रमुख हैं, उन सबकी आज्ञाओं का पालन करें। प्रश्न हो तो उनसे पूछें। आज के मंगल प्रभात में क्षत्रिय युवक संघ की ओर से यही संदेश है।

●

अपनी गलती स्वीकार कर लेने में लज्जा की कोई बात नहीं है। इससे, दूसरे शब्दों में, यही प्रमाणित होता है कि बीते हुए कल की अपेक्षा आज आप अधिक बद्धिमान हैं।

– अलेक्जेण्डर पोप

गतांक से आगे

यदुवंशी करौली का इतिहास

– राव शिवराजपालसिंह इनायती

हाड़ोती के राव मदनपाल, महाराजा धर्मपाल के द्वितीय पुत्र के वंशज और महाराजा प्रताप पाल और नरसिंह पाल के सबसे नजदीकी रक्त संबंधी थे, जबकि भरतपाल का रक्त संबंध दूर का था। पॉलिटिकल एजेंट की नजर में भरतपाल के गोद लिए जाने के विरुद्ध सबसे बड़ी और मजबूत दलील यह थी कि नरसिंहपाल स्वयं उस समय नाबालिग थे, उनके हाथों में राज की कोई शक्ति भी निहित नहीं थी। कप्तान जे सी ब्रूक ने माजी साहिबा सिसोदनी जी के ज्येष्ठ कृष्ण 13 संवत 1909 को लिखे पत्र के अनुवाद में भी यही लिखा है कि प्रताप पाल की मृत्यु के बाद जैसे हाड़ोती के राव नरसिंह पाल करौली के राजा बने, उसी आधार पर मदन पाल को भी नरसिंह पाल की मृत्यु के बाद निर्विवाद रूप से करौली के राजा की मान्यता दी जानी चाहिए। इसी क्रम में 28 मई, 1853 को करौली राज के तीनों प्रमुख जागीरदारों ठाकुर लछमन चंद अमरगढ़, इनायती से राव बिहारी पाल एवं ठाकुर श्याम पाल रामठरा के साथ-साथ ठाकुर गोपाल सिंह हरनगर, मनोहरसिंह माची के, भवानी सिंह और गिरवर सिंह बड़ौदा के, मेंगरी के भगत सिंह के साथ मचानी कोटे आदि के साथ हीरा जागा, गोपाल जागा, मिलिया, शोभा जागा आदि ने भी अपने पत्र में हाड़ोती का राव, करौली का राजा, परम्परा का उदाहरण देते हुए मदन पाल के पक्ष में ही लिखा। (जागा/बड़वा/वंशावली लेखक)

पोलिटिकल एजेंट की नजर में भरत पाल के गोद लिए जाने के खिलाफ यह तथ्य भी था कि राज करौली के चारों प्रमुख जागीरदारों में से एक भी गोद लिए जाने के समय उपस्थित नहीं थे, ना पोलिटिकल एजेंट से भी कोई अनुमति ली गई और ना ही उन्हें कोई सूचना दी गई। करौली राज्य के पड़ोसी राज्य और राजपुताने के प्रमुख रजवाड़ों से भी पत्र लिखकर उनकी सलाह माँगी गई, जिनमें मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, बूंदी और कोटा प्रमुख थे। कोटा महाराव के अनुसार भरत पाल के पक्ष में निर्णय मदन पाल के न्यायोचित हक को मारना जैसा होगा। पहाड़गढ़ (ग्वालियर) भी मदनपाल के पक्ष में थे। ब्रेंडरेथ के अनुसार मेवाड़ से भी यही उत्तर आया कि राजा के निसंतान और वारिस को गोद लिए बिना गुजर जाने की हालत में प्रमुख जागीरदारों की सहमति आवश्यक है।

मेजर रिकर्ड्स, एंडरसन और कैप्टन ब्रुक के अनुसार भरतपाल की तुलना में मदनपाल ही नरसिंहपाल के अधिक नजदीकी संबंधी ठहरते हैं और उस हिसाब से हक भी उन्हीं का बनता है। कप्तान बर्टन की राय थी कि मदन पाल एक परिपक्व उम्र के समझदार व्यक्ति हैं जिनमें शासन संभालने की योग्यता भी है, इसके साथ ही उसका मानना था कि मदनपाल के संतान होने की उम्मीद भी है। इसी सब कार्यवाही के दौरान भरतपाल की मृत्यु भी हो गई।

अंत में मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी और बीकानेर रियासतों से खतो किताबत तथा करौली के तीनों प्रमुख जागीरदारों के साथ अन्य दो तिहाई प्रमुख लोगों की राय तथा एजेंट हेनरी लॉरेंस की सिफारिश के आधार पर कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने मदन पाल के पक्ष में फैसला लेकर अपने पत्र में पॉलिटिकल एजेंट को निर्देशित किया कि सर हेनरी लॉरेंस स्वयं करौली जाकर मदनपाल की गद्दी नशीनी करवाएँ। मदनपाल जो इस सारे दौरान जयपुर रह रहे थे सवाई माधोपुर आए, जहाँ उनकी मुलाकात माउंट आबू से आए पॉलिटिकल एजेंट सर हेनरी लॉरेंस से हुई। वहाँ से हाड़ोती में एक रात दोनों के डेरे हुए, फिर नारोली होते हुए एक रात इनायती रुक कर राव बिहारी पाल को साथ लेकर करौली पहुँचे। करौली में और पूरे राज में इस निर्णय से उत्सव का माहौल था, ऐसे में फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा संवत् 1910 को होली के दिन

(14 मार्च, 1854) को मदन पाल सिंहासनारूढ़ हुए और सभी अमीर उमरावों ने नजर न्योछावर किया। शाम को शहर में राजा का जुलूस निकला और लगभग दो वर्षों से अधिक की अनिश्चितता के बादल छंट गए। महाराजा मदन पाल बहुत दूरदर्शी और कुशल प्रशासक साबित हुए। ईस्वी सन् 1857 में कोटा गढ़ में राजपरिवार और अंग्रेज अधिकारियों को विद्रोहियों ने घेर लिया, ऐसे में कोटा की महारानी (करौली के महाराजा प्रताप पाल की बेटी) ने मदन पाल को पत्र लिखकर सहायता माँगी। पत्र मिलते ही महाराजा मदन पाल द्वारा मलूक पाल के नेतृत्व में छीतर पाल, विशाल सिंह, दीवान हरदेव सिंह, रिसाले के हाकिम जयकिशन तथा मीरजादा अकबर अली बेग के साथ पंद्रह सौ सैनिकों की गारद भेजी गई, जिसने कोटा जाकर विद्रोहियों को मारकर भगाया और गढ़ में बंद राजपरिवार और अंग्रेज अधिकारियों और उनके परिवारों को मुक्त कराया। किसी कवि ने मदन पाल की प्रशंसा में मदन पाल रासो लिखा, जिसे कोटा रासो भी कहा जाता है। इसी प्रकार 1875 में ही अंग्रेजों द्वारा सहायता माँगे जाने पर सैफुल्लाह खाँ के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी फरेह मथुरा और शमसाबाद आगरा भी भेजी। कोटा और आगरा में करौली राज की सहायता के बदले अँग्रेज सरकार ने एक लाख सत्तर हजार का कर्जा माफ कर दिया तथा तोपों की सलामी भी पंद्रह से बढ़ाकर सत्रह की गई, इसी के साथ G.C.S.I. (Grand Cross of the Star of India) के खिताब से भी नवाजा गया।

महाराजा मदन पाल ने अपने मददगार बालूराम को दीवान नियुक्त किया और जयकिशन को फौजी रिसाले का हाकिम बनाया। इस राजा के समय ही करौली में शफाखाना खोला गया और उसमें एक डॉक्टर भी नियुक्त किया गया। शिक्षा के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को समझते हुए मदनपाल ने साठ के दशक में ही आज से डेढ़ सौ साल से भी पहले हाई स्कूल खोला। तथा अन्य छोटे स्कूल भी शुरू करवाए। इनके समय में 1868 में करौली राज में भयानक अकाल पड़ा। प्रजा तकलीफ नहीं पाए इसलिए अंग्रेज सरकार से दो लाख रुपए का कर्जा लेकर राज में जगह-जगह बाँध और भवन निर्माण करवाए। सबसे पहले इसी राजा ने काम के बदले अनाज जैसी योजना लागू की, करौली शहर के हर दरवाजे पर मुंशी बैठाए गए, जो हर आने-जाने वाले के ब्यौरे में उम्र, शारीरिक स्थिति, किस काम में महारत है आदि दर्ज करते थे। रात को दरवाजों पर मुफ्त खाना उपलब्ध कराया जाता था और अगले दिन उस व्यक्ति की योग्यतानुसार काम पर लगा दिया जाता था एवं शाम को काम के बदले अनाज दिया जाता था। सावन शुक्ला एकादशी संवत् 1926 तद्नुसार ईस्वी सन् 1869 को महाराजा मदन पाल का बिना किसी वारिस के स्वर्गवास हो गया। **(क्रमश:)**

विश्व है असि का, नहीं संकल्प का है,
हर प्रलय का कोण कायाकल्प का है,
फूल गिरते, शूल सिर, ऊँचा किए हैं,
रसों के अभिमान को, नीरस किए हैं,
खून हो जाए न तेरा देख पानी,
मरण का त्योहार जीवन की जवानी!

– पं. माखनलाल चतुर्वेदी

गतांक से आगे

देवी राठासण मंदिर (राष्ट्रश्येना) मरूवास (उदयपुर) : धार्मिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन

– डिम्पल शेखावत, सीनियर रिसर्च फेलो

अब यहाँ उल्लेख करने योग्य जानकारी यह है कि यह महाराणा जगतसिंह जी के काल का अभिलेख है जो संभवत: किसी जीर्णोद्धार कार्य के समय यहाँ उत्कीर्णीत किया गया था। उनके समय अनेक पुराने मन्दिरों, तालाबों आदि का जीर्णोद्धार करवाया गया था साथ ही ज्ञात हो कि जवंता जी, महाराणा जगतसिंह जी की माता का नाम था। इनके संबंध में राजप्रशस्ति की छठी शिला में यह जानकारी आई है कि विक्रम संवत 1664 में भादप्रद शुक्ला द्वितीया के दिन राजा कर्णसिंह की पत्नी, महेचा राठौड़ जसवंतसिंह की पुत्री श्रीमती जाम्बुवती की कोख से महाबली जगतसिंह का जन्म हुआ[1]। तथा आगे के श्लोकों से जानकारी मिलती है कि विक्रम संवत् 1698 के कार्तिक मास में दीपावली उत्सव पर बाईजी राज जवंता जी ने गुजरात के द्वारका की तीर्थ यात्रा की थी।[2]

किन्तु मंदिर के इस अभिलेख में लिखित विक्रम संवत 1689 में क्या विशेष घटना घटी थी यह अन्य स्रोतों से भी समझ नहीं आ सकी जबकि उक्त शिलालेख में आए'' .... दास नाथ'' जी पुत्र जवंता जी को 'गरीब दास' के रूप में पढ़ा जा सकता है क्योंकि जगदीश मंदिर प्रशस्ति की तृतीय शिला, जिसमें देवी राठासण तथा उसके पर्वत की महिमा का वर्णन है उसी के आगामी 41वें श्लोक में जगतसिंह जी के भाई गरीब दास का भी वर्णन है जो दानादि में उनके साथ रहे।[3] किन्तु उक्त (राठासण मन्दिर) शिलालेख का आशय स्पष्ट नहीं है।

जिस स्तम्भ पर यह शिलालेख है इसी के निचले भाग पर भी एक धुंधला शिलालेख है, जिसे पढ़ा नहीं जा सकता ऐसे ही दो अन्य शिलालेख मन्दिर के सभामण्डप स्थित देवी के सम्मुख रखे सिंह की पट्टिका तथा पास की दीवार पर भी हैं किन्तु विधि पूर्वक साफ कर, छाप लेकर पढ़ने की अनुमति प्राप्त नहीं होने के कारण उनका पाठ अज्ञात है जबकि गर्भगृह के समीप स्थित ताक के बीच अवस्थित शिलालेख की एक पट्टिका और है जिस पर ''संवत् 1763 वर्ष सावण बदि बुधे.....पढ़ा जा सका है।

अर्थात् यह अभिलेख विक्रम संवत् 1763 यानी 1706 ईस्वी के सावण की एकादशी का है जिस दिन बुधवार था आगे का लेख अस्पष्ट है।

इसी ताक के पास वाले स्तम्भ पर भी एक अपेक्षाकृत बड़ा अभिलेख है, जिसका दीवार के पास वाला भाग घिसकर धुंधला हो चुका है जबकि आंतरिक भाग का पाठ इस प्रकार है –

र वरषे श्री सु.......
त्रधार हमी.......
र जी सुत सा.......
दुल जी रा.......
त तेर.......

यह लेख देवी राठासण के मन्दिर का जीर्णाद्धार करने वाले सूत्रधार हमीर जी, पुत्र सादुल जी के विषय में किसी जनकारी देने के संबंध में उत्कीर्णीत किया गया था जो कई स्थानों से घिस गया है।

इस प्रकार इस मंदिर के सभामण्डप क्षेत्र से इस अध्ययन के दौरान छह अभिलेख प्राप्त हुए, जो इस आलेख में प्रथम बार प्रकाशित हुए हैं। इतना ही नहीं विभिन्न स्थानों पर शिल्पकारों के आठ से अधिक नाम भी उत्कीर्णीत हैं, जैसे– गंगा, पदमा, वीलमू, टीलकू,

शिल्पकारों के अनेक चिह्न प्राप्त हुए हैं। भारतविद्या विद् श्रीकृष्ण जुगनू के अनुसार– इन चिह्नों के अभाव में शिल्पकारों को भुगतान नहीं होता था, तथा यह मंदिर में किए उनके कार्य का सूचक था जिसका संबंध मजदूरी से होता था।

इसके अतिरिक्त राज्य अभिलेखागार, उदयपुर जिला से प्राप्त ''बही महकमा खास मेहता जालमसिंह जी' में वर्ष 1872 (विक्रम संवत् 1929) में सोलह दिवस की पूजा के लिए चैत्र सुदी 14; शुक्रवार को माता जी श्री राठासण जी को 154 रुपये के खर्च की फरद अर्थात् विवरण भेजा था। इस तरह लगभग आठवीं शताब्दी से सम्बन्धित कथाओं में इस मंदिर के वर्णन से लेकर आज तक सतत् रूप से यह मेवाड़ क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण मंदिर रहा है लेकिन नीमज/खीमज माता तथा करणी माता मंदिर जितना जनसाधारण में लोकप्रिय नहीं है। झालों का गुढ़ा क्षेत्र के अतिरिक्त मेवाड़ के अन्य लोगों को इस विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं है।

अब पुनः एक बार मंदिर के स्थापत्य को देखें तो गर्भगृह के उत्तरांग पट्ट पर अनेक आकृतियाँ थी जो कालान्तर में घिस गई अथवा सफेद चूने में इतनी अधिक पुती है कि घिसी हुई प्रतीत होती है। गर्भगृह के दोनों ओर दो कोष्ठक बने हैं। जिनकी प्रतिमा वहाँ नहीं है अनुमान है कि इन कोष्ठकों में महिषासुर मर्दिनी तथा गणेश जी की प्रतिमा रही होगी क्योंकि पहाड़ी मंदिर के दुर्गम्य मार्ग से कुछ दूर (पर्वत के आन्तरिक भाग से) दो भग्नावशेष प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं जो उसी पाषाण व माप की है जैसी मूर्ति इन कोष्ठकों में कभी रही होगी। इनके नीचे गर्भगृह के द्वार पर कुल चार प्रतिमाएँ हैं, जिनमें से दो विकराल है जबकि अन्य दो उनके नीचे क्रमशः छोटी प्रतिमाएँ हैं, किन्तु सिन्दूर की लालिमा व माली पन्नों से ढंकी होने के कारण उनकी पहचान कठिन है। वहीं गर्भगृह की मुख्य देवी प्रतिमा को देखें तो देवी का शृंगार इस प्रकार का है कि मुख के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता तथा ''श्री एकलिंग जी ट्रस्ट प्रशासन'' ने मंदिर की देवी प्रतिमा के अध्ययन व तस्वीरें लेने के सम्बन्ध में अनुमति प्रदान नहीं की, अतः प्रतिमा नहीं देखी जा सकी एवं देवी की तस्वीरें इस शोध पत्र में सम्मिलित नहीं की जा सकी। किन्तु प्रतिमा को जानने की जिज्ञासा के कारण ग्राम में ऐसे बुर्जुग जानकार व्यक्तियों को ढूंढने का प्रयास किया जिन्होंने कभी प्रतिमा के दर्शन किए हों अथवा उन्हें इसके सम्बन्ध में जानकारी हो। ऐसे ग्राम जानकारों से जो जानकारी प्राप्त हुई, उसके अनुसार यह प्रतिमा काले ग्रेनाइट पत्थर की महिषासुर मर्दिनी स्वरूप की है, जिसमें देवी महिष (भैंसे) का संहार कर रही है तथा समीप ही देवी के सिंह का अंकन है एवं इस प्रतिमा में देवी के अष्टादश भुजाएँ हैं। यहाँ एक अन्य महत्त्वपूर्ण सूचना ग्राम के ही एक अन्य जानकार व्यक्ति से मिली कि वे इस प्रतिमा का कर्नाटक से बनकर आया सुनते हैं। इन जानकारियों के साथ प्रतिमा के वास्तविक अध्ययन की आवश्यकता फिर भी बनी हुई है, लेकिन विकल्प के रूप में हम एकलिंग पुराण में आए देवी प्रतिमा के स्वरूप की सहायता ले सकते हैं। जो देवी प्रतिमा स्वरूप के सम्बन्ध में वर्णन करता है कि–

मुक्ता विद्रुममहारादयां पीनोन्नतपयोधराम्।
खड्ग चर्मधरां वीरां धनुर्बाणोपशोभिताम्।।
सदा प्रसन्न वदनां शरच्चन्द्रनिभाननाम्।
चतुर्भुजां महादेवी ब्रह्मादियुपतीवृताम्।।

अर्थात्– देवी ने मोती और विद्रुम के हार धारण किए हुए थे। उनका वक्षस्थल पीनोन्नत पयोधर वाला था। वह खड्ग, चर्म, धनुष तथा बाण धारण किए शोभित वीराकृति थी। सदा प्रसन्न मुद्रा शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा की आभा विस्फारित करती थी। चार भुजाओं वाली वह महादेवी ब्रह्माणी आदि दैव-युवतियों से युक्त थी।[4]

इस प्रकार वर्तमान अष्टादशभुजा स्वरूप महिषासुर मर्दिनी देवी की अपेक्षा एकलिंग पुराण तो देवी प्रतिमा को चतुर्भुजा घोषित करता है अर्थात् एकलिंग पुराण के

रचनाकाल के बाद यह प्रतिमा किसी काल में बदली गयी थी, बदलने के अनेक कारण हो सकते हैं। स्वयं एकलिंग पुराण के प्रारम्भ में यह वर्णन आया है कि विविध कारणों जैसे- पुजारी पलायन, आक्रान्ता अतिक्रमण, आक्रमणों के कारण प्रतिमा आघात आदि कारणों से कुछ प्रतिमाएँ स्पर्श दोषादि से निषिद्ध मान ली गई, इसलिए ग्रंथकार ने पुन: प्रतिष्ठा हेतु 24वां अध्याय के प्रतिष्ठा, पुनर्प्रतिष्ठा के विधान को न्यास सहित लिखा है[5] तथा एक अन्य स्थान पर स्पष्ट किया है कि इस काल में कई प्रतिमाओं को बदला गया। काष्ठ की प्रतिमाओं को अग्नि को अर्पित कर दिया जबकि खण्डित व निषिद्ध प्रतिमाओं को जल में विसर्जित कर दिया।[6]

लेकिन देवी राठासण के सम्बन्ध में इस काल तक तो ऐसा नहीं हुआ होगा क्योंकि पुराण में देवी का चतुर्भुजा स्वरूप ही वर्णित है, अत: इसके बाद वाले पाँच सौ वर्षों में ही कभी देवी प्रतिमा परिवर्तित हुई है।

इसी पुराण में देवी को ''श्येन (पक्षी)'' के रूप में वज्र हाथ में लेकर राष्ट्र के लिए सन्नद्ध रहना बताया है।[7] ध्यान रखने योग्य बात यहाँ यह है कि देवी नागणेची के सम्बन्ध में भी यह लोक प्रसिद्ध है कि देवी पंखिणी के रूप में रक्षा का कार्य करती है। 'दयालदास सिंढायच' ने 'ख्यात देशदर्पण'[8] में 'राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' द्वारा संपादित 'राठौड़ वंश री विगत एवं राठौड़ां री वंशावली'[9] में भी देवी नागणेची के पंखिनी स्वरूप में पूजे जाने का वर्णन है। उल्लेखनीय है कि एकलिंग पुराण में भी देवी राठासण (राष्ट्रश्येना) के सम्बन्ध में ऐसा ही श्लोक आया है। जो इस प्रकार है कि -

रणे क्रूरादि कार्येषु वज्रहस्तां च पक्षिणीम्।
स्मरेत सर्वप्रयत्नेन सौम्यरूपां च सौम्य के।।

अर्थात् युद्ध के अवसर पर तथा क्रूरता सम्बन्धी कार्य के दौरान सर्वप्रयत्न करके देवी के हाथ में धारण किए पक्षिणी रूप का स्मरण करें किन्तु सौम्य कार्य होने पर उसके सौम्य स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।[10]

इस तरह इस मंदिर में विराजित देवी राष्ट्रश्येना तथा नागणेची में यह भी एक साम्य दिखाई पड़ता है। वही हम ख्यात देशदर्पण के राठेश्वरी देवी के वरदान से रठ्वर (रठवड़) कहलाने वाली बात को ध्यान में रखकर यदि 'रठ्ठ' जाति या कुल को देखें तो राजस्थान से प्राप्त अभिलेखों में राठौड़ वंश का रठावर, राठवड़, राठउर, राठउड़, राठड़, रठड़ा और राठौड़ नाम मिलता है[11] तथा राष्ट्रकूटों के लेखों में उनकी जाति (वंश) का नाम 'रठ्ठ' देखने को मिलता है,[12] वैसे भी राष्ट्रकूट व राठौड़ एक ही कुल के दो नाम हैं, इस पर कई इतिहासकारों का कार्य प्रकाशित व प्रसिद्ध है। कीर्तिपाल चौहान के अभिलेख में यह 'राठौड़'[13] तथा दक्षिण के राष्ट्रकूट वंशी मयूरगिरी के राजा नारायण शाह के कवि रुद्र के द्वारा लिखे महाकाव्य 'राष्ट्रौढ़ वंश महाकाव्य' में यह 'राष्ट्रौढ़' दिखाई पड़ता है।[14]

इसी क्रम में यदि हम राष्ट्रकूटों का देवली ताम्रपत्र देखें तो उसमें वर्णन है कि इस वंश का मूलपुरुष ''रट्ठ'' था[15] तथा सिरूर के प्राप्त अमोघवर्ष के लेख में उसे ''रट्ट वंशोद्भव'' कहा है।[16] इन तथ्यों के प्रकाश में कुल देवी के अध्ययन के सम्बन्ध में यह भी एक दिशा है कि हम अमोघवर्ष की देवी सम्बन्धी मान्यता का अध्ययन करें, इस संदर्भ में संजनताम्रपत्र से यह जानकारी प्राप्त होती है कि किन्हीं अनिष्टों से बचाव हेतु उन्होंने महालक्ष्मी की अर्चना की थी तथा अपनी एक अंगुली उन्हें काटकर भेंट की थी, इस विवरण के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह देवी कोल्हापुर की महालक्ष्मी थी।[17]

इतिहासकार पद्मश्री मीनाक्षी जैन भी इसी मत की पुष्टि करते हुए जानकारी देती है कि महालक्ष्मी का अब तक ज्ञात सबसे प्राचीनतम उल्लेख 817 ईस्वी का राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष का ताम्रपत्र है। वह महालक्ष्मी का अनन्य भक्त था।[18] वे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''फ्लाइट ऑफ डेअटिज् एण्ड रिबर्थ ऑफ टेम्पल्स्'' में देवी के मूर्तिकंन का उल्लेख भी करती है जिसके अनुसार देवी के प्रतिमांकन का प्राचीनतम उल्लेख 13वीं शताब्दी का है जिसमें हेमाद्रि अपनी पुस्तक चतुर्वर्गचिन्तामणी में विश्वकर्माशास्त्र का

उल्लेख कर प्रतिमा के बाएँ निचले हाथ में श्रीफल रखा होना तथा दाएँ निचले हाथ में प्याला होना बतात हैं जबकि वर्तमान में देवी प्रतिमा के बाएँ निचले हाथ में प्याला/खप्पर एवं दाएँ निचले हाथ में श्रीफल के स्थान पर मातुलिंग है, साथ ही देवी के मस्तक पर जो नागछत्र है उसका उल्लेख विश्वकर्माशास्त्र में नहीं है।[19]

वहीं देवी पुराण (महाभागवत)-शक्तिपीठाङ्क में करवीर शक्ति पीठ-कोल्हापुर की महालक्ष्मी देवी का प्रतिमांकन, मार्कण्डेयपुराण के अन्तर्गत सम्मिलित 'देवी माहात्म्य' (श्री दुर्गासप्तशती) के अनुसार निम्नलिखित है।

मातुलुङ्ंग गदां खेटं पानपात्र च विभ्रती।
नागं लिङ्ंग च योनिं च विभ्रति नृप मूर्धीन।।

अर्थात् चतुर्भुजा जगन्माता के हाथों में मातुलिंग, गदा, ढाल व पान पात्र है। मस्तक पर नाग व लिंग व योनि है तथा देवी के चरणों के पास उनका वाहन सिंह है।[20]

इस प्रकार राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष की इष्ट देवी कोल्हापुर महालक्ष्मी भी चतुर्भुज है जिनके मस्तक पर नाग है किन्तु चतुर्वर्गचिंतामणी नामक साहित्यिक स्रोत उसका उल्लेख नहीं करता जबकि प्रतिमा में स्वयं तथा देवी माहात्म्य में इसका वर्णन है। यह वर्णन एकलिंग पुराण में वर्णित देवी राष्ट्रश्येना के स्वरूप जैसा ही है किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इन दोनों स्वरूपों का राजस्थान के राठौड़ों की नागणेची नाम से प्रसिद्ध तथा नागाणा प्रमुख धाम स्थित देवी प्रतिमा के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाए लेकिन, चूंकि, नागाणा नामक प्रमुख धाम स्थित देवी की प्रतिमा अस्पष्ट है।

अत: ऐसे में यदि मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित देवी नागणेची की प्रतिमा को देखें तो पता चलता है कि देवी चतुर्भुजा है जिसके हाथों में शंख, चक्र आदि है। मस्तक पर नाग छत्र है तथा देवी सिंह पर विराजमान है।[21]

श्रीमान् महेन्द्र सिंह नगर ने अपनी पुस्तक 'मारवाड़ के राजवंश की सांस्कृतिक परम्पराएँ' में इस प्रतिमा के संदर्भ में श्री हिपतपाल सिंह 'हितकर' की लेखनी का उल्लेख किया जो इस प्रकार है कि- 1515 चैत्रादि सं. 1516 की चैत्र सुदि 11 शनिवार को राव जोधा ने नागणेचा गाँव से मूल मूर्ति मंगवाकर दुर्ग में स्थापित करवाई, परन्तु इस बात को साबित करने के पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं किन्तु इस लेखनी पर महेन्द्रसिंह नगर ने आगे टिप्पणी की है कि जोधपुर राठौड़ों का सिरमौर गढ़ है यदि राव जोधा ने ऐसा किया तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी।[22]

इस प्रकार इतिहास के विभिन्न उदाहरणों व प्रतिमाओं में यह अंकन स्पष्ट करते हैं कि तीनों देवियों में ना केवल साम्य है अपितु 'रट्ठ कुल' से तीनों ही सम्बन्धित देवियाँ हैं जो इनके इतिहास को विभिन्न कालों में सातत्यता प्रदान कर रही है।

अब यदि हम वर्तमान में मरुवास स्थित देवी राठासण के वर्तमान अष्टादश भुजाधारी महिषासुरमर्दिनी स्वरूप को संदर्भ में रखकर, बीकानेर स्थित नागणेची मंदिर की मूर्ति को देखें तो वह भी चाँदी की अष्टादश भुजा धारिणी महिषासुरमर्दिनी प्रतिमा है जो राव बीका को जोधपुर के पितृ राज्य की तरफ से प्राप्त हुई।[23]

शकुन चिह्नों (पूजनीय वस्तुओं) की परम्परा में मिली यह प्रतिमा संभवत: कुल (वंश) की परम्परा में निरंतर रही होगी तभी राव बीका जी को नागणेची रूप में यह उपलब्ध करवाई गई। पुन: उल्लेखनीय है कि बीकानेर में स्थित यह मंदिर नागणेची माता का मंदिर ही कहलाता है किन्तु बिना किन्हीं प्रमाणों के कुल देवियों पर लिखने वाले कई लेखकों व टिप्पणीकारों ने आगे से आगे यह प्रसारित किया है कि राठौड़ों द्वारा कुल देवी का बोध नहीं होने पर उन्होंने महिषासुरमर्दिनी स्वरूप की पूजा शुरू कर दी, जिसके कारण न राज्य स्थिर रहा ना यश मिला, यह यूं ही प्रसारित किया गया कथन है जिसे ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। साथ ही राज्य और यश तो सभी कुलों (वंशों) के आते-जाते रहे हैं और जहाँ तक बात राठौड़ों द्वारा महिषासुर मर्दिनी स्वरूप को पूजने की है तो 'तन्त्रचूडामणी' के संदर्भ से देवी पुराण में यह उल्लेख आया है कि करवीर

(कोल्हापुर) में जहाँ महालक्ष्मी मंदिर है वहाँ देवी सती के तीन नेत्रों का पतन हुआ था, यहाँ की शक्ति महिषमर्दिनी तथा भैरव क्रोधीश है तथा यहाँ का महालक्ष्मी मंदिर ही महिषमर्दिनी का स्थान है –

करवीरे त्रिनेत्र में देवी महिषमर्दिनी।
क्रोधीशो भैरवस्तत्र.............।।[24]

अत: इस प्रकार प्रस्तुत शोध से स्पष्ट है कि देवी राठासण (राष्ट्रश्येना) का मरुवास स्थित यह मंदिर अत्यधिक ऐतिहासिक महत्त्व का है, जिससे सम्बन्धित साहित्यिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्रोत उपलब्ध हैं और इन्हीं स्रोतों से इस मंदिर के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी हमें प्राप्त होती है। इसी दिशा में इस मंदिर के राजपूत जाति के राठौड़ वंश से सम्बन्ध होने के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं जो सिद्ध करते हैं कि किसी ना किसी रूप में यह मन्दिर प्राचीन समय में राष्ट्रकूट (राठौड़) वंश से जुड़ा था, साथ ही इस मंदिर तथा राजस्थान के प्राचीन राठौड़ वंश (राव सीहा से पहले) के सम्बन्ध में अधिक शोध की आवश्यकता भी बनी रहती है ताकि दोनों के साथ-साथ प्राचीन राजस्थान के इतिहास के धुंधले पक्षों की जानकारी अधिक स्पष्टता से जुटाई जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :– 1. श्री कृष्ण जुगनु, शिलोत्कीर्ण राजप्रशस्ति : महाकाव्यम् (मेवाड़ का अभिलेखीय इतिहास), आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्मरण 2018, पृ. 91, 2. वही, पृ. 93, 3. श्री कृष्ण जुगनु, शिलोत्कीर्ण राजप्रशस्ति : महाकाव्यम् (मेवाड़ का अभिलेखीय इतिहास), आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृ. 183, 4. श्री कृष्ण जुगनु, भँवर शर्मा, श्रीमद् एकलिंङ्गपुराणम् (शैवतीर्थ स्थल पुराण) आर्यावत संस्कृति संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृ. 406 5. वही, पृ. 31, 6. वही, पृ. 31, 7. वही, पृ. 123, 8. के.के. जैन (प्रधान संपादक) 1989, ख्यात देशदर्पण सिंढाचय व दयालदास कृत (बीकानेर राज्य का इतिहास), राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, पृ. 3, 9. फतहसिंह (1967) राठौड़ वंश री विगत एवं राठौड़ री वंशावली, निदेशक राजस्थान, प्राच्य विद्या पब्लिकेशन, जोधपुर, राजस्थान, पृ. 7, 10. श्री कष्ण जुगनु भँवर शर्मा, श्रीमद् एकलिङ्गपुराणम् (शैवतीर्थ स्थल पुराण), आर्यावत संस्कृति संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ. 410, 11. विश्वेश्वर नाथ रेऊ, राष्ट्रकूटों (राठौड़) का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पंचम संस्मरण 2016, पृ. 12, 12. वही, पृ. 10, 13. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, षठा संस्करण 2018, पृ. 88, 14. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, राष्ट्रकूटों (राठौड़) का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पंचम संस्करण 2016, पृ. 12, 15. वही, पृ. 7, 16. वही, पृ. 7, 17. मीनाक्षी जैन, फ्लाइट ऑफ डेअटिज् एण्ड रिबर्थ ऑफ टेम्पल्स (एपीसोड्स फ्रॉम इण्डियन हिस्ट्री), आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ. 203, 18. वही, पृ. 202-203, 19. वही, पृ. 203, 20. कल्याण देवी पुराण महाभागवत, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश, पृ. 475, 21. महेन्द्र सिंह नगर, मारवाड़ के राजवंश की सांस्कृतिक परम्पराएँ, (प्रथम खण्ड), राजस्थानी ग्रन्थागार, जाधेपुर, द्वितीय संस्करण, पृ. 143, 22. वही, पृ. 142-143, 23. वही, पृ. 101, 24. कल्याण देवी पुराण, महाभागवत शक्ति पीठ, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश, पृ. 475

जीवन में हर्ष विषाद की धड़ियाँ आती ही रहती हैं। उन्हीं में गुंथी रहती है आशा निराशा। कभी सुख की अनुभूति होती है तो होठों पर हास की चाँदनी खिल उठती है, तो कभी व्यथा में नेत्रों से दु:ख के मोती झर जाते हैं। कभी मन में दृढता का प्रकाश आता है, कभी विचलन का अन्धेरा, यही जीवन के धूपछाँव के फूलों का रहस्य है।

– शकुंतला शुक्ल

अपनी बात

हमारे यहाँ आश्रम व्यवस्था थी। पूरे सौ वर्ष के जीवन को चार भागों में बांटा गया था। जीवन के पहले 25 वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम के थे, दूसरे 25 वर्ष गृहस्थाश्रम के थे, तीसरे 25 वर्ष वानप्रस्थ आश्रम के थे और अन्तिम 25 वर्ष संन्यास आश्रम के थे। प्रथम आश्रम जो विद्या ग्रहण के लिए था, उसमें विद्यार्थी जंगल में रहते थे और अन्तिम आश्रम (संन्यास) के लोग भी जंगल में रहते थे। ये लोग उन विद्यार्थियों के लिए गुरु का, शिक्षक का काम करते थे। इस व्यवस्था में जीवन के प्रथम पड़ाव वाली पीढ़ी का जीवन के अन्तिम पड़ाव वाली पीढी से मिलन होता था, परस्पर संवाद बना रहता, उन दोनों पड़ावों की पीढियों के बीच सम्बन्ध हो जाता था। सत्तर साल, पचहत्तर साल का वृद्ध पाँच और दस साल के बच्चों से सम्बन्ध बनाता था। सत्तर-पचहत्तर साल में जो जिन्दगी में उसने जाना है और सीखा है उससे उस नई पीढी को परिचित करवा देता था।

बहुत कुछ ज्ञान है जो विश्वविद्यालयों में नहीं सीखा जाता, जिन्दगी के अनुभव में ही सीखा जा सकता है। जिस दिन से यह माना जाने लगा कि सारा ज्ञान विश्वविद्यालय से मिल सकता है, उस दिन से संसार में ज्ञान तो बहुत मिला है लेकिन प्रज्ञा बहुत कम होती चली गई है। विश्वविद्यालय में ज्ञान भले ही मिल जाए पर प्रज्ञा नहीं मिलती है। प्रज्ञा तो जिन्दगी की ठोकरों, टक्करों और संघर्षों में ही मिलती है। वह तो जीवन से गुजर कर ही मिलती है।

हमारी प्राचीन आश्रम व्यवस्था में हम अपने सबसे ज्यादा वृद्ध व्यक्ति को अपने सबसे ज्यादा छोटे बच्चे से मिला देते थे। ताकि आयु की दोनों पीढियाँ, आती और विदा होती पीढियाँ, डूबता हुआ सूरज उगते हुए सूरज से मुलाकात कर जाए और बारह घंटे की अपनी यात्रा में उसने जो पाया है वह उगते हुए सूरज को दे जाए। जीवन भर के अनुभवों का सार, अनुभवों का निचोड़ नई पीढी को मिल जाए। परन्तु आज की नई व्यवस्था में यह सम्बन्ध टूट गया है। उसके खतरनाक परिणाम हुए हैं। पीढियों के बीच फासला बढ गया है। वृद्धों और बच्चों के बीच किसी प्रकार का संवाद नहीं है। बूढों और बच्चों के बीच कोई बातचीत नहीं रही। बूढे की भाषा न बच्चे समझते हैं, न बच्चे की भाषा (भाव) बूढे समझते हैं। बूढे बच्चों पर नाराज हैं, बच्चे बूढों पर हंस रहे हैं। यह उनकी नाराजगी का ढंग है। अगर जिन्दगी में एक तारतम्य न रह जाए और जीवन में पीढियाँ इस तरह दुश्मन की तरह खड़ी हो जाये तो जिन्दगी एक अराजकता बन जाती है। इससे जिन्दगी का सारा संगीत, सारा आनन्द खो जाता है।

कई बार कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' अर्थात् यह तो युवकों का संघ है, इसमें बुढों का क्या काम? ध्यान रहे क्षत्रिय त्याग, बलिदान, उत्सर्ग के भाव से कभी वृद्ध नहीं बनता है। शरीर चाहे कमजोर हो जाए पर क्षत्रिय तो इन भावों से बनेगा और इन भावों में क्षत्रिय के सदैव यौवन बना रहता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ में बच्चे भी आते हैं और बुढे भी आते हैं। दोनों पीढियाँ साथ-साथ रहती हैं। बुढों ने अपने सांघिक जीवन में जो पाया है, वह उपार्जन नई पीढी को भी मिलती है। बड़ी आयु के स्वयंसेवक अपने अनुभवों का लाभ नये स्वयंसेवकों को देते हैं। संघ की अपनी यात्रा में जैसे शिक्षण से वे गुजरे हैं, उस शिक्षण का कैसे प्रभाव पड़ा और नई पीढी में वही प्रभाव डालने के लिए शिक्षण को वर्तमान युग में कैसे समीचीन बनाया जा सकता है यह पुरानी पीढी जागरुकता के साथ कर रही है। दोनों पीढियों में सामञ्जस्य बना रहता है। दोनों पीढियों का परस्पर संवाद एक दूसरे की भावना को समझने में कारगर बना रहता है। परिणामस्वरूप पूरे संघ परिवार में जीवन आनन्द की लहर बनी रहती है।

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि	
01	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	सोडवाली (बीकानेर)	बीकानेर लूणकरणसर मार्ग पर बामनवाली उतरें आगे टैक्सी व्यवस्था। सम्पर्क - मनोहरसिंह-9928732261
02	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	भूरासर (बीकानेर)	बीकानेर से 9 व 12 बजे, बज्जू से 12.30 व 4.20 बजे चारणवाला से 5 बजे बस उपलब्ध है। सम्पर्क : सवाईसिंह-9649000725, जगमालसिंह गोकुल-9784504254
03	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	बांदरा (बाड़मेर)	जयसनो की ढाणी। 0 पाइंट कवास से MPT सड़क मार्ग से जयसनो की ढाणी बांदरा।
04	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	सणाऊ (बाड़मेर)	बाड़मेर-चोहटन मार्ग पर स्थित।
05	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	शिव (बाड़मेर)	राव चांपा संस्थान। सम्पर्क-हेमसिंह कोटड़ा, दशरथसिंह कोटड़ा
06	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	डिग्गा (जैसलमेर)	रामगढ़, मोहनगढ़, नाचना, जैसलमेर से नेहड़ाई तक बस।
07	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	बोनाड़ा (जैसलमेर)	पोकरण से भैंसड़ा, वहाँ से बोनाड़ा। बाड़मेर से बोनाड़ा सीधी बस है।
08	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	सिहड़ार (जैसलमेर)	जैसलमेर व बाड़मेर से सीधी बस है।
09	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	जयपुर	सूरपुरा फार्म हाउस, कालवाड़ रोड़, जयपुर। जयपुर-जोबनेर मार्ग पर टोल प्लाजा से 500 मीटर पहले दाहिनी ओर।
10	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	झाड़ोल (उदयपुर)	राजस्थान विद्यापीठ कॉलेज। सम्पर्क : हैप्पीसिंह बोराणा-9783586360 खुशवन्तसिंह-9982302556
11	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	आचीणा (नागौर)	नागौर व खींवसर से बस।
12	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	रणसीसर जोधा (नागौर)	नागौर-डीडवाना मुख्य मार्ग पर।
13	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	सुल्ताना (झुंझुनू)	चिड़ावा से सुल्ताना बसें।
14	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	नांदड़ी (जोधपुर)	पावटा से नांदड़ी बसें।
15	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	पांचला (जालोर)	गोगाजी का थान। सांचोर, सांकड़ से बस व टैक्सी। सम्पर्क : तनसिंह सुरावा-9783327147 सज्जनसिंह पांचला-9413124050

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि	
16	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	कावतरा (जालौर)	जोगमाया मंदिर। भीनमाल-बागोड़ा मार्ग पर कावतरा उतरें। सम्पर्क : चंदनसिंह कावतरा-8058853853
17	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	शिवरति (भीलवाड़ा)	गंगापुर से साधन उपलब्ध है। सम्पर्क : गजेन्द्रसिंहजी चौकी का खेड़ा-7878726300 कानसिंह खारड़ा-9982600303
18	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	झिंझनयाला कलां (जोधपुर)	बालेसर से तिंवरी रोड़ पर।
19	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	बैठवासिया (जोधपुर)	ओसियाँ से बसें।
20	प्रा.प्र.शि.	11.8.2022 से 14.8.2022	भोपालगढ (जोधपुर)	
21	प्रा.प्र.शि.	11.8.2022 से 14.8.2022	सूरपुरा-(कल्याणपुर) (बाड़मेर)	बाड़मेर व जोधपुर से कल्याणपुर बसें। कल्याणपुर से सूरपुरा। सम्पर्क : दौलतसिंह मुंगेरिया
22	प्रा.प्र.शि.	11.8.2022 से 14.8.2022	तोगावास (चूरू)	सरदारशहर से तारा नगर मार्ग पर।
23	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 16.8.2022	कोसाम्बा-सूरत (गुजरात)	बालीवुड सिटी, सावा-पारड़ी रोड़, मांगरोल।
24	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 16.8.2022	मटोन्ध (उ.प्र.)	डी.सी. लॉन, स्टेशन रोड़, मटोन्ध, जिला-बान्दा सम्पर्क : डॉ. देवीसिंह-9598197224
25	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 15.8.2022	भोपोली (मुंबई) (पालघर)	पालघर से विक्रमगढ़ सड़क मार्ग।
26	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 15.8.2022	आणन्द (गुजरात)	इन्टरनेशनल स्कूल मोगर।
27	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 15.8.2022	कमाणा- (गुजरात)	गाँव में
28	प्रा.प्र.शि.	14.8.2022 से 16.8.2022	भगोड़ी- (गुजरात)	गांधी नगर।
29	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	बामणिया (चूरू)	सुजानगढ़, सालासर से बसें।
30	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	बावतरा (जालौर)	श्री कैवाय माताजी मंदिर। सायला-सिणधरी मार्ग पर। बस सुविधा उपलब्ध है। सम्पर्क : मानवेन्द्रसिंह भाटी-9784888131, जसवंतसिंह-9414633438
31	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	सरवाड़ (अजमेर)	देशराजसिंह जी लसाड़िया-9680307647 भगवानसिंह जी देवगाँव-9928823123
32	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से	आटी	बाड़मेर से बालेरा मार्ग पर आटी।
33	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	जोधियासी (नागौर)	

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि	
34	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	सोढों की ढाणी (बाड़मेर)	सुदा बेरी। धोरीमन्ना से सांचोर मार्ग पर।
35	प्रा.प्र.शि.	18.8.2022 से 21.8.2022	बाली (पाली)	उम्मेद राजपूत छात्रावास, फेब इण्डिया स्कूल के सामने, कॉलेज रोड़, बाली। इस शिविर में कक्षा 12 से ऊपर वाले ही सम्मिलित हो सकेंगे।
36	प्रा.प्र.शि.	19.8.2022 से 22.8.2022	सूरत (गुजरात)	
37	प्रा.प्र.शि.	19.8.2022 से 22.8.2022	दिल्ली NCR	
38	प्रा.प्र.शि.	27.8.2022 से 29.8.2022	विरोल (गुजरात)	तह. दांती वाड़ा।
39	प्रा.प्र.शि.	30.8.2022 से 1.9.2022	डेल (गुजरात)	बनासकांठा, तह. थराद।
40	प्रा.प्र.शि.	2.9.2022 से 5.9.2022	गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)	इण्डो किड्स स्कूल। सभी जगह से साधन उपलब्ध। सम्पर्क : शिवनाथसिंह जी अंटाली-9950506904 सतवीरसिंह जी-7852810002
41	प्रा.प्र.शि.	2.9.2022 से 5.9.2022	सोनड़ी (बाड़मेर)	चिमनसिंह की ढाणी। बाड़मेर से विशाला होते हुए चिमनसिंह की ढाणी।
42	प्रा.प्र.शि.	2.9.2022 से 5.9.2022	खारची (बाड़मेर)	आर.एस. विद्यापीठ। बाड़मेर से हरसाणी सड़क मार्ग पर।
43	प्रा.प्र.शि.	2.9.2022 से 5.9.2022	सागवाड़ा (डूंगरपुर)	डूंगरपुर व आसपुर से सागवाड़ा के लिए बस। सम्पर्क : गुमानसिंह वलाई-9602554818 प्रहलादसिंह जी चिबुड़ा-9799993046
44	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	जाजवा-तह. गिड़ा। (बाड़मेर)	बायतु, बालोतरा गिड़ा व बाड़मेर से बस। सम्पर्क- पर्वतसिंह जाजवा-9828673790
45	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	लाडनू (नागौर)	
46	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	मेडता सिटी (नागौर)	नागौर-अजमेर मार्ग पर।
47	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	लूणावास (जोधपुर)	जोधपुर से बसें उपलब्ध।
48	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	चाबा (जोधपुर)	जोधपुर से बसें उपलब्ध।
49	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	लूणकरण (बीकानेर)	बीकानेर से बसें उपलब्ध।
50	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	चतरपुरा (जयपुर)	

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि	
51	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	नगा (जैसलमेर)	रामगढ़, मोहनगढ़ से बस। जैसलमेर से वाया रामगढ व जैसलमेर से तेजपाला बस।
52	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	भणियाणा (जैसलमेर)	पोकरण-फलसूंड मार्ग पर स्थित।
53	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	छगनपुरी की छतरी (जैसलमेर)	फतेहगढ़ से झिंझनियाली मार्ग पर रीवड़ी फांटा पर उतरें।
54	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	भंवरानी (जालौर)	सम्पर्क : राजेन्द्रसिंह भंवरानी-9413123738
55	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	कैलाशनगर (सिरोही)	बिलेश्वर महादेव मंदिर वाण मार्ग पर। हरजी, जावाल, शिवगंज से बस सुविधा। सम्पर्क : पाबुसिंह मांडानी-9413852579 शैलेन्द्रसिंह उथमण-9001950183
56	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	सिलासन (जालौर)	शिलेश्वर महादेव मंदिर। करड़ा, रानीवाड़ा से बस सुविधा। सम्पर्क : रेंवतसिंह जाखड़ी-7665005702 गणपतसिंहपुर-9982832431
57	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	आऊवा (पाली)	सूजा महाराज की धूनी। मारवाड़ जं. व जोजावर से बस द्वारा जेतपुरा प्याऊ उतरें, वहां शिविर स्थल के लिए साधन उपलब्ध रहेगा। सम्पर्क : महिपालसिंह बासनी-9571663891

बालिका शिविर :

58	प्रा.प्र.शि.	6.8.2022 से 9.8.2022	रायपुर (पाली)	भास्कर एकेडमी कृष्णा होटल के पीछे। बाटेलाव तालाब के पास, मुख्य हाईवे टोक टैक्स के पास। सम्पर्क -8005715150, 9460726200

पाली, सिरोही, जालोर से आने वाले रायपुर हाईवे पर उतरें। यहाँ से शिविर स्थल 1 कि.मी. दूर टैक्सी। जयपुर, जोधपुर, अजमेर मार्ग से आने वाले बर उतरें, वहाँ से 5 कि.मी., टैक्सी। रेलमार्ग से आने वाले हरिपुर स्टेशन पर उतरें, वहाँ से टैम्पो शिविर स्थल तक।

59	प्रा.प्र.शि.	11.8.2022 से 14.8.2022	बेलवा राणजी (जोधपुर)	बालेसर-तिंवरी रोड़ पर।
60	प्रा.प्र.शि.	13.8.2022 से 16.8.2022	महोबा (उ.प्र.)	माँ चन्द्रिका महिला महाविद्यालय, महोबा। सम्पर्क : श्रीमती ज्योति सिंह-8400106964
61	प्रा.प्र.शि.	14.8.2022 से 16.8.2022	काणेटी (गुजरात)	प्राथमिक शाला।
62	प्रा.प्र.शि.	3.9.2022 से 6.9.2022	बीकानेर	शहर में।
60	**बाल शिविर**	13.8.2022 से 14.8.2022	जालोर शहर	सम्पर्क : ईश्वरसिंह सांगाना-9414882535
61	**बाल शिविर**	13.8.2022 से 16.8.2022	पाली शहर	सम्पर्क : महोब्बतसिंह धींगाना-9772589809

दीपसिंह बेण्याकाबास

शिविर कार्यालय प्रमुख, श्री क्षत्रिय युवक संघ

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक श्री पदम् सिंह भाऊड़ा के कॉलेज लेक्चरर इतिहास में चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं

-: शुभेच्छु :-

मूल सिंह काठाड़ी, जेतमाल सिंह बिशाला , पदम् सिंह कंवरली, परबत सिंह जाजवा, दौलत सिंह मुंगेरिया, जीवराज सिंह दाखा, प्रेम सिंह परेऊ, वीरम सिंह वरिया, चन्दन सिंह चांदेसरा, गोविंद सिंह गुगड़ी, वीरम सिंह थोब, सुमेर सिंह कालेवा, करण सिंह दूधवा, ईश्वर सिंह पादरू, जालम सिंह पीपलून, सुरेंद्र सिंह गुगड़ी, रूप सिंह परेऊ, मूल सिंह चांदेसरा, हनवंत सिंह मवड़ी, महेंद्र सिंह पादरड़ी कला, मूल सिंह जानकी,जोगसिंह नोसर, विशन सिंह चांदेसरा समस्त स्वयंसेवक, सम्भाग बालोतरा।

कक्षा दसवीं में 96% प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर हार्दिक शुभकामनाएं।

सवाई सिंह पुत्र श्री गुलाब सिंह सोढा
गांव सार्दुल सिंह की ढाणी कीता
तहसील फतेहगढ़ जैसलमेर

सौजन्य से :- गुरुकृपा हेंडलूम देवीकोट
गुरुकृपा टेक्सटाइल देवीकोट
मो. 9783364077

GST CERTIFIED | GST PRACTITIONER | Tally POWER OF SIMPLICITY | TAX HELP

दौलतसिंह राठौड़ मुंगेरिया

8094968445 02980-294014

GST एवं आयकर सहायता केन्द्र

G.S.T., इनकम टेक्स, TDS
एकाउन्टिंग (नामा), प्रोजेक्ट रिपोर्ट, CMA डाटा
उद्यम रजिस्ट्रेशन, BRN रजिस्ट्रेशन
सोसायटी(NGO) रजिस्ट्रेशन, EPFO-ESI रजिस्ट्रेशन
डिजिटल सिगनेचर(DSC डोंगल), ट्रेडमार्क
CC - मुद्रा लोन फाईल, फूड लाईसेंस, पेनकार्ड,
एकाउन्ट्स एवं व्यापार सलाह से
सम्बन्धित सम्पूर्ण कार्य किया जाता है।

सच्चियाय कॉम्पलेक्स
नागाणा रोड़, कल्याणपुर (बाड़मेर)

Rathore Group

RATHORE
BHAGYAJEET & CO.

GOVT. & CIVIL CONTRACTOR

Office : A-9, Brij Bhavan CHSL., Vasai (West), Dist : Palghar- 401 202
Mobile : +91 9172097220 / +91 9326678407 **Email : rathore.co@gmail.com**

Bhagyajeet Singh S/O Shersingh Rathore

Add : Flat no. 1801, 18th Floor, E-Wing Utopia, Garden Grove Phase-II,
Shimpoli Gorai Road, Nr. Kanti Park, Chikuwadi. Borivali (W). Mumbai-400 092

अगस्त, सन् 2022
वर्ष : 59, अंक : 08

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2020-22

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान् ....

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह